● पूर्वा वशिष्ठ, सातवीं, भोपाल, म.प्र

● पार्थ बक्षी, पाँचवीं, भावनगर, गुजरात

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

के 185 वें अंक में

विशेष

फरडीनैंड नाम के एक बैल की कहानी तुम इस अंक में पढ़ोगे। यह ऐसा बैल था जिसे लड़ाई करना अच्छा नहीं लगता था । बल्कि उसे अच्छा लगता था फूलों को सूँघते रहना। आगे तुम खुद ही पढ़ लो। पेज 19 से।

● मानसिंग व्याम, भोपाल, म. प्र.

कहानी

19 ☼ फरडीनैंड

कविताएँ

3 ☼ बैठे वे दम साध

28 ☼ आराम

हर बार की तरह

2 ☼ इस बार की बात

4 ☼ मेरा पन्ना

30 ☼ माथापच्ची

36 ☼ वर्ग पहेली

रोचक शृंखला

15 ☼ गीत–संगीत : 7

24 ☼ खेल दुनिया भर के : कुश्ती

29 ☼ हमारे शिक्षक : 24

33 ☼ खेलें खेल, गाएँ गीत : 11

धारावाहिक

11 ☼ प्यारा कुनबा : 12

और भी बहुत कुछ

10 ☼ खेल खेल में : माचिस की तीलियों से आकृतियाँ

16 ☼ आलसी पहिए

27 ☼ सूक्ष्मदर्शी से

37 ☼ अपनी प्रयोगशाला : कीड़ों का व्यवहार

● आवरण : आशीष नगरकर

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

चकमक के इस अंक में तुम पढ़ोगे मनरो लीफ की लिखी एक कहानी। स्पेन में बैल की लड़ाई का खेल होता है। बैल को एक बहुत बड़े मैदान में छोड़ दिया जाता है और उसे उकसाया जाता है कि वो गुस्से में आए और हमला करे। फिर जब बैल हमला करता है तो बैठे सिपाही उसे घेरकर उससे लड़ते हैं, उसे मारते हैं। इस खेल में देखने वाले भी खूब मज़ा लेते हैं। तुम ही सोचो भला इस तरह के खेल में मज़ा आने की क्या बात होती होगी? लेकिन इस कहानी में बैल लड़ाई करना ही नहीं चाहता, उसे तो कुछ और ही पसंद है। तुम्हें यह कहानी ज़रूर अच्छी लगेगी।

पिछले दिनों हमारे देश में और अन्य देशों में आए भूकम्प की खबरें तुमने पढ़ी होंगी, सुनी होंगी। भूकम्प आने पर वहाँ रहने वाले लोगों को किन मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, उन्हें कैसा महसूस होता होगा, इसका हम केवल अंदाज़ा ही लगा सकते हैं। लेकिन भूकम्प की त्रासदी झेलने वालों की मदद हम जिस तरह भी कर सकें, करना चाहिए।

भूकम्प आने के कारणों में कई अलग–अलग बातें बताई जाती हैं। यदि हम पृथ्वी की संरचना के बारे में जान लें तो भूकम्प आने के कारणों को भी एक हद तक समझ सकते हैं।

चकमक के अगले किसी अंक में पृथ्वी की संरचना के बारे जानकारी देने का प्रयास करेंगे। भूकम्प कैसे नापते हैं, यह इसी अंक में बता रहे हैं।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-16 अंक-8 फ़रवरी, 2001

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम
अशोक रोकड़े

सहयोग
राकेश खत्री
सुशील शुक्ल

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 463380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

बैठे वे दम साध

भोलू टीवी से नाराज़
उस कमरे में गए तक नहीं आज।

आँखें टेस्ट करा के लौटे
बूढ़ों सी कमज़ोर
कानों में है दर्द
भरा है विज्ञापन का शोर

कान सफाई करने वाला बोला
भोलूराम! इसे निकालें कैसे
यह तो भीतर तक घनघोर।

पापा जी रिज़ल्ट लाए हैं
गुस्से में आए हैं
भोलू छुपे हुए बैठे हैं
खुद से शरमाए हैं
अम्मा ढूँढ रही हैं उनको
बैठे वे दम साध।

● नवीन सागर

● चित्र : मनोज कुलकर्णी

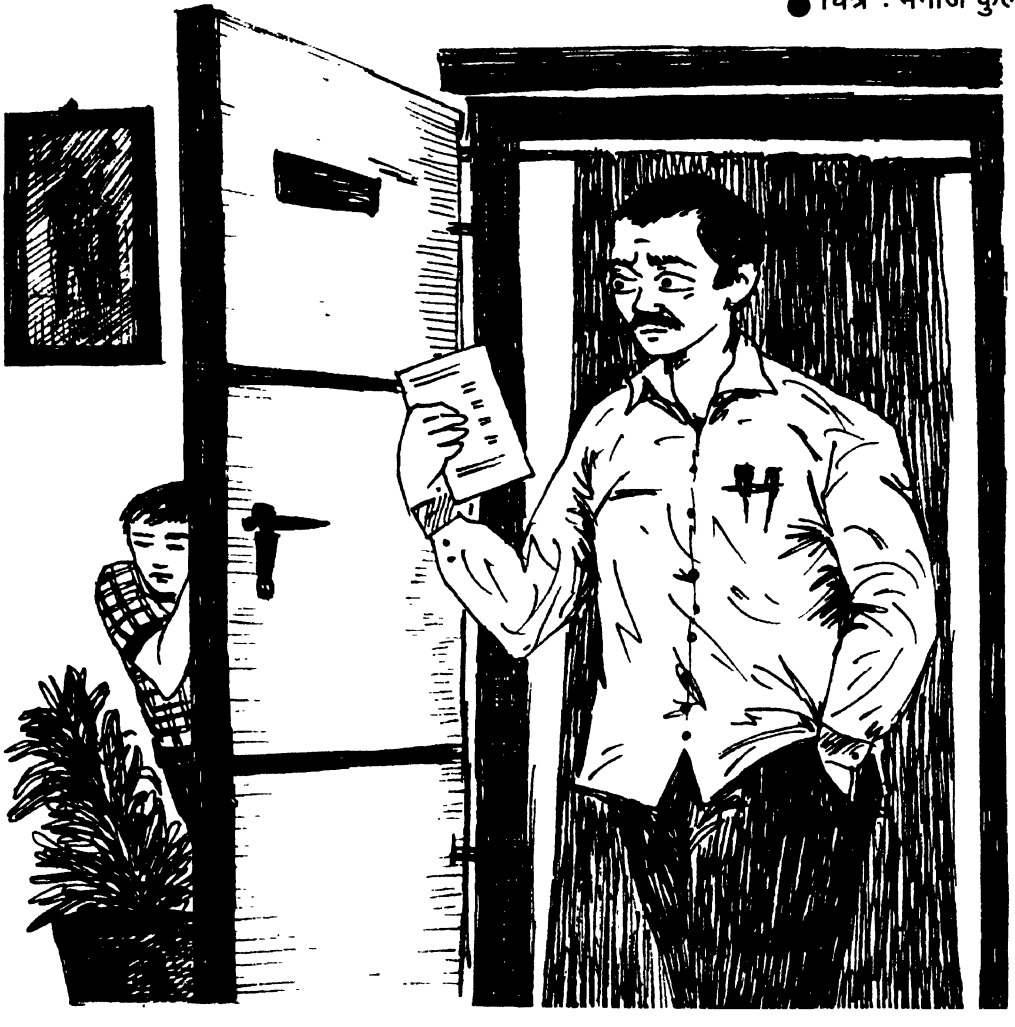

झूले से गिरे

एक बार मैं और मेरे दो दोस्त पास के गाँव में मेला देखने गए। वहाँ पर हम लोगों ने मेला घूमने के बाद झूला झूलने का विचार बनाया। तो हम लोग झूले वाले के पास गए। और उसे पैसे देकर हम तीनों झूले में बैठ गए।

दस चक्कर पूरे होने के बाद हम लोगों के उतरने के लिए झूला रुका। झूला जल्दी ही आगे बढ़ने लगता है जिसमें मेरे दोस्त तो जल्दी कूदकर उतर गए। और मैं उतर न सका। तो मैंने जबरदस्ती उतरने की कोशिश की जिससे मैं गिर पड़ा और हाथ के बल पर गिरने से मेरे हाथ में मोच आ गई। फिर हम लोग डॉक्टर के पास गए और डॉक्टर ने हाथ देखकर कुछ दवाइयाँ दीं। तब कहीं जाकर एक माह में मेरा हाथ ठीक हो सका।

● अजय कुमार जैन, दसवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

● चित्र : गुनगुन, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

मेला

हमारे गाँव में 31 जनवरी, 2000 को मेला लगा। यह मेला कलवृक्ष के नाम से पूरे जिले में प्रसिद्ध है। इसमें हजारों की संख्या में आदमी, बच्चे और औरत आते हैं। स्त्रियाँ कलवृक्ष के पेड़ की पूजा करती हैं। मैं भी मेले में गया। खूब मज़ा आया। चारों ओर झूले, चकरियाँ, दुकानें, सर्कस आदि थे। मेरे साथ मेरा भाई राजू भी था। जब मैं झूले को देखने में रह गया तो वह न जाने कहाँ चला गया। मैंने खूब ढूँढा पर वह नहीं मिला। अन्त में मैं परेशान होकर एक जगह बैठ गया। फिर मुझे अचानक रोने की आवाज़ आई, तो मैंने देखा कि मेरा भाई रो रहा है। मैं उसके पास गया, और उसे चुप कराया। उसे कुल्फी दिलाई तथा मेले का आनन्द लेकर घर लौट आए।

● सुरेन्द्र कुमार वैष्णव, मकरेड़ा, राजस्थान

मेरा पन्ना

जब बर्फ गिरी

पहले तो बारिश हुई
फिर जाकर बर्फ गिरी
वो भी डेढ़ घण्टा।
फिर जाकर ओले पड़े
वो भी छोटे-छोटे।
एक फिट बर्फ गिरी
फिर जाकर ज़रा बंद हुई,
तब जाकर हम बाहर
फिर हमने बर्फ से खेला।
अंदर आकर अँगीठी सेंकी
फिर से मैं बाहर गई
देखने लोगों को।
लोग भी घूमने गए
हम भी घूमने जाएँगे,
बर्फ को खूब खाएँगे।

● मनु पांडे, अपरगली, जाखनदेवी, अल्मोड़ा, उत्तरांचल

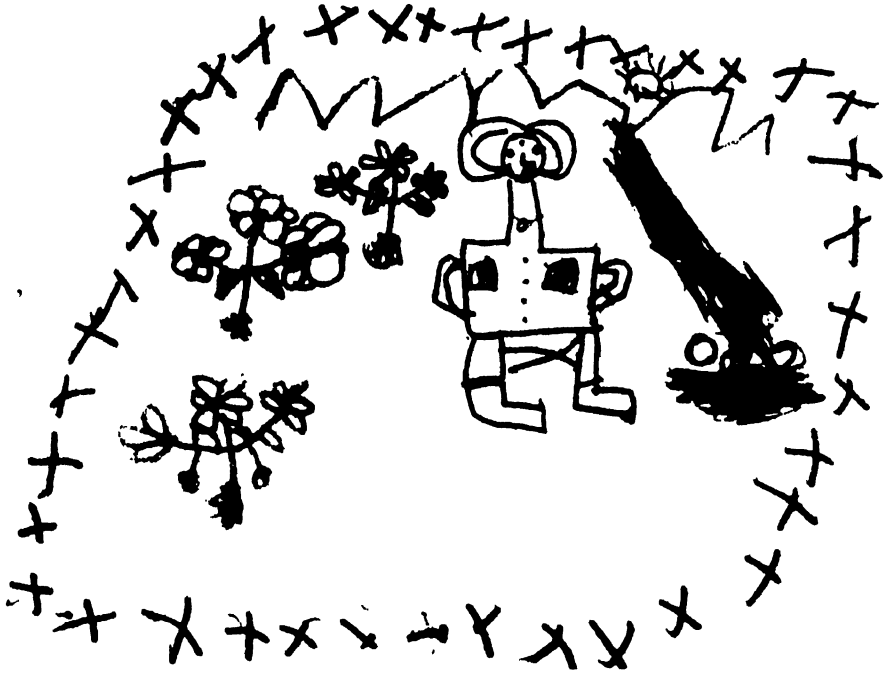

● चित्र : ओनया मिये, पहली, इटालीन, अरुणाचल प्रदेश

लड़की को चोट लगी

एक बार मैं खेल रही थी मेरी मम्मी-पापा इन्दौर गए थे। मैं बगीचे में थी। एक स्कूल का टैम्पो बहुत दूर से बहुत तेजी से आ रहा था। और जैसे ही मुड़ा तो वह गिर गया। मैं एकदम डर गई। मैंने सहेली की मम्मी को मैंने बुलाया कि आन्टी जी टैम्पो गिर गया है। तो वह तेजी से बाहर आईं।

उस टैम्पो में एक लड़की को इतनी जोर से सिर में लगी कि वह बेहोश हो गई। मेरी सहेली की मम्मी ने उस लड़की के स्कूल बेग में से एक कापी निकाली तो उसमें उस लड़की का घर का पता और फोन नम्बर लिखा था। मेरी सहेली की मम्मी ने उस लड़की के घर फोन लगाया। उसके घर से उसकी मम्मी आ गई। उसे अस्पताल में भर्ती किया। और वह चार दिन में ठीक हो गई। उस लड़की की मम्मी ने मेरी सहेली की मम्मी को धन्यवाद किया और मैंने उस लड़की से दोस्ती कर ली। वह मेरे घर कभी-कभी आती है। उस लड़की नाम आरती वर्मा है।

● गायत्री कारपेंटर, नौवीं, देवास, म. प्र.

मेरा पन्ना

स्वतंत्रता दिवस मनाया

● प्रणव, पाँच वर्ष, भोपाल, म. प्र.

14 अगस्त से मैंने स्वतंत्रता दिवस मनाने की तैयारी की। आस-पास के मित्र रशीद, खुर्शीद, समीर, अनवर, साबिया को स्वतंत्रता दिवस मनाने की बात कही, कुछ पैसे जमा किए। बाज़ार से एक रुपए की बच्चा मिठाई खरीदी। उसके साथ ही एक तिरंगा झंडा चक्र वाला मिल गया। गमले में मिट्टी भरकर झण्डे की लकड़ी को इस गमले में खड़ा कर दिया। झण्डे को डोरी से बाँध दिया। झण्डे को छत पर रखकर डोरी नीचे लटका दी। बाजार से केले, चॉकलेट और फूलमाला लाए। 15 अगस्त को 11 बजे मेरे घर पर आने का तय कर सब मित्र अपने-अपने घर चले गए।

15 अगस्त को अब्बा जी स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम मनाने चले गए। हम सब मित्र भी अपनी-अपनी पाठशालाओं में चले गए। पाठशालाओं के कार्यक्रमों से निपटकर सभी मित्र 11 बजे मेरे घर पर आए। अभी तक अब्बाजी घर नहीं आए थे। हमने छत के नीचे एक रंगोली हलदी से बनाई। वहाँ मैंने रस्सी खींची, ऊपर से खुर्शीद, अनवर ने रस्सी की गाँठ खोल दी। झण्डा फहराने लगा। ऊपर से फूल बरसा दिए। सभी ने खड़े होकर राष्ट्रगान गाया। भारत माता की जय के नारे लगाए।

मैंने भाषण में कहा, स्वतंत्रता दिवस की सभी को बधाई हो। हमें देश और झण्डे की रक्षा करना है। खुर्शीद ने हबीब का स्वागत किया। भाषण में शेर की कहानी सुनाई। रशीद ने बिल्ली और बन्दर की कहानी सुनाई। अन्त में केले और चॉकलेट बाँटे और सभी का आभार मानकर कायक्रम खत्म किया।

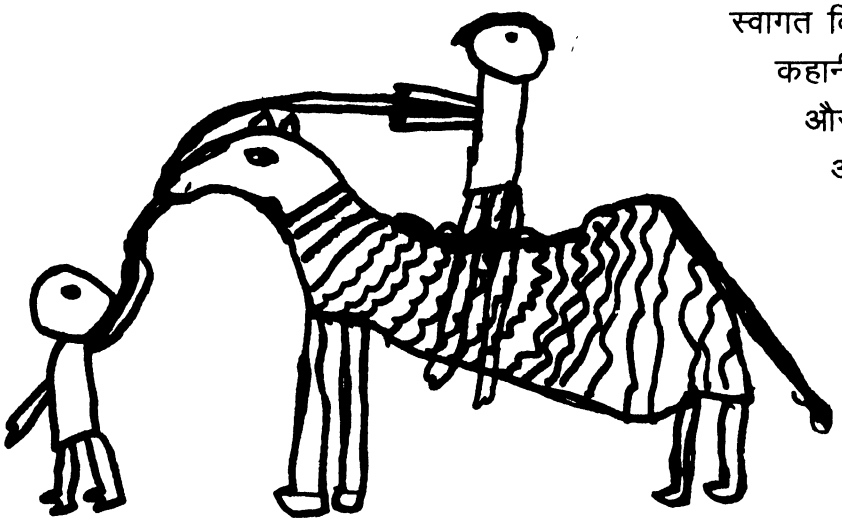

● हबीब अनवर राही, आठवीं, जावद, म. प्र.

● चित्र : रजनी व्याम, तीसरी भोपाल, म. प्र.

ट्रेन का सफर

कहीं अगर जाना हो तो आने-जाने का सबके मन को पसंद आने वाला साधन सबकी प्यारी ट्रेन है। ट्रेन में कई धर्मों, जातियों और शहरों के लोग एक साथ मिल-जुलकर सफर करते हैं। सब बैठकर एक साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। मगर कभी-कभी जगह न होने के कारण या भीड़ अधिक होने के कारण खड़े होकर भी जाना पड़ता है। कई तरह के लोग होते हैं। कुछ लोग हँसमुख होते हैं तो कुछ गुस्से वाले। हँसमुख लोगों के साथ सफर करने में बड़ा आनन्द आता है। सफर थोड़ी ही देर में कट जाता है। ट्रेन में कुछ बुद्धिमान लोग भी होते हैं, जिनसे हमें कई ज्ञानवर्द्धक बातें सीखने को मिलती हैं। ट्रेन की आवाज़ मधुर लगती है, जब वह हार्न बजाती है। बरसात का समय जब बारिश के छींटे, उसकी बूँदें ट्रेन में पड़ती है। ट्रेन में बहुत लम्बी यात्रा करने वाले यात्री भी बैठे रहते हैं।

● **जितेन्द्र कुमार अहिरवाल, हरदा, म.प्र.**

झील में गिरी

एक लड़की थी जिसका नाम सिमरन था। वह बहुत सीधी लड़की थी। वह कक्षा पाँचवीं में पढ़ती थी। उसके स्कूल से टूर पर ले जाया जाता था। हर बार की तरह इस बार भी स्कूल में टूर पर जाने की तैयारी हो रही थी। वह भी जाना चाहती थी। उसने अपनी मम्मी से ज़िद की। उसकी मम्मी ने मना कर दिया। फिर वह उदास बैठ गई। उसके पापा वहीं पर बैठे उसे देख रहे थे। उन्होंने टूर पर जाने के लिए हाँ कर दी। वह बहुत खुश हो गई।

दूसरे दिन सुबह तैयार होकर स्कूल चली गई। वहाँ से 9 बजे सभी टीचर बच्चों को लेकर टूर के लिए रवाना हो गईं। ये लोग एक झील पर पहुँच गए। वहाँ सभी टीचर हरी-हरी घास पर बैठी थीं। सभी बच्चे खेल रहे थे। तभी दो लड़कियाँ झील पर लड़ने लगीं। सिमरन वहीं खड़ी देख रही थी। एक ने दूसरी को चाँटा मारा। तो दूसरी ने उसे धक्का दे दिया। वह झील में गिर गई। सिमरन तेजी से दौड़ी और एक गिलकी की बेल उखाड़ लाई और झील में लटकाई। अन्दर वाली लड़की ने बेल पकड़ ली और ऊपर आ गई। फिर सभी टीचर वहाँ आ गईं और सिमरन की पीठ थपथपाई। सभी टूर से वापस लौट आए। सिमरन ने अपने मम्मी-पापा को यह बात बताई।

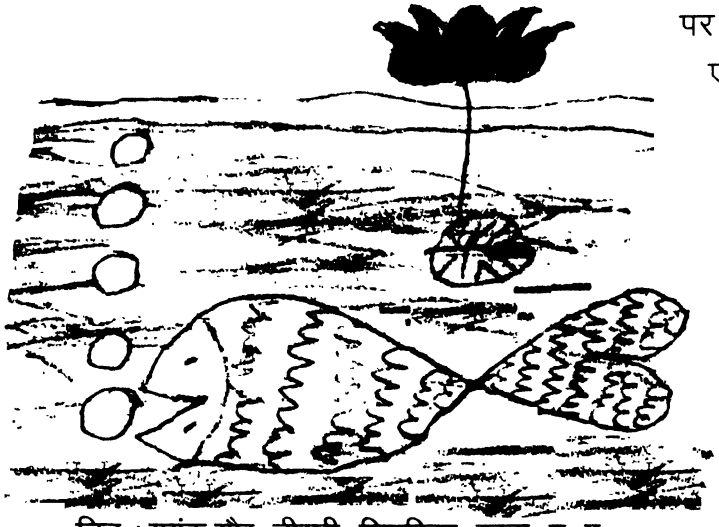

चित्र : मयंक गौर, तीसरी, खिरकिया, हरदा, म. प्र.

● **शिनम साबिर खान, धार, म.प्र.**

माँ और बच्चा

एक माँ अपने बच्चे को खाना खिला रही है। वह बच्चा तकिया लगाए बिस्तर पर लेटा हुआ खाना खा रहा है।

● चित्र और शब्द : सुरभि सन्चाली, पाँचवीं, दिल्ली

मेरा घर

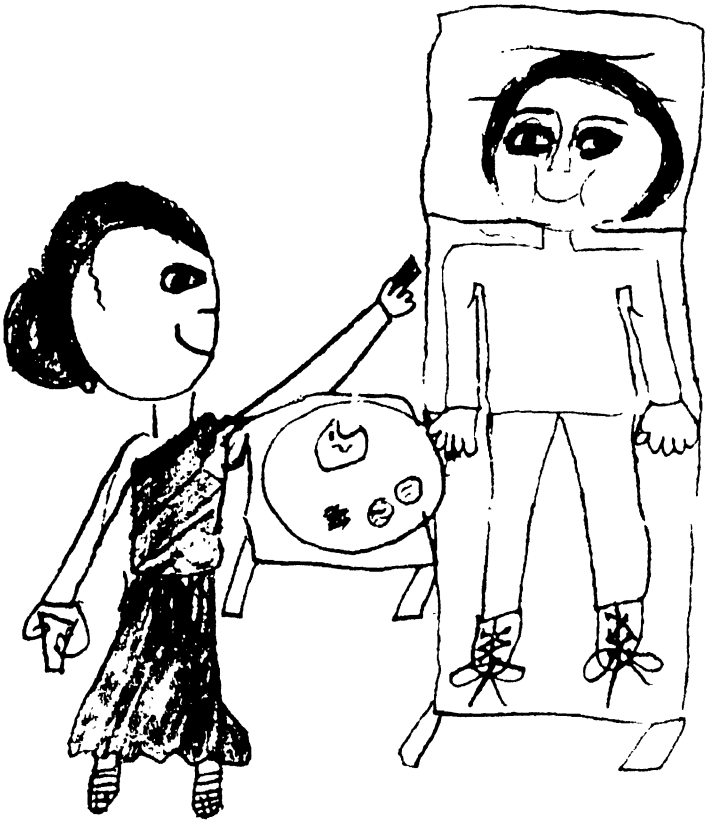

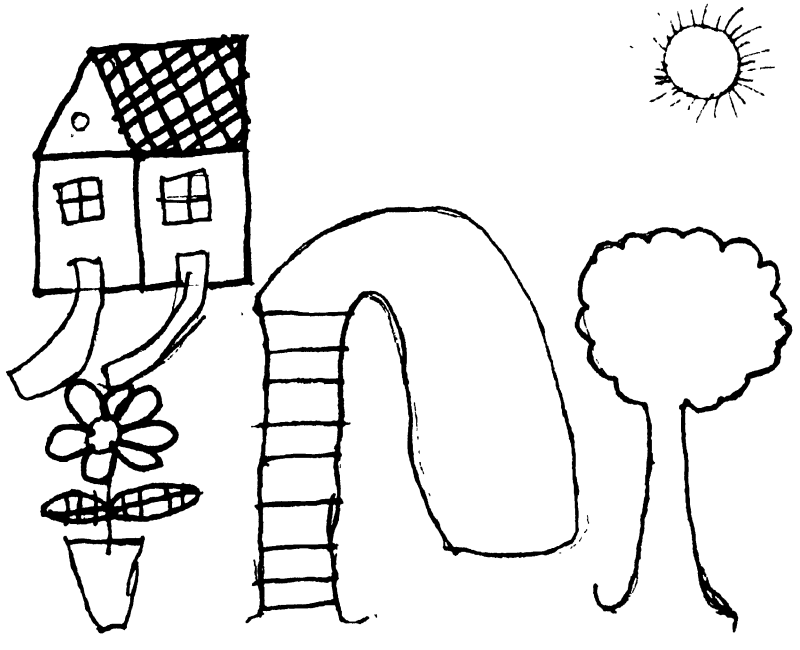

मेरा घर बहुत बड़ा है। मेरे घर में पेड़ है। एक झूला भी है। पेड़ में फूल लगे हैं। मैं फूल तोड़ती हूँ। और झूले पर बैठती हूँ। मुझे मेरा घर पसंद है।

● चित्र और शब्द : योगिता कोटवानी, पाँचवीं, भोपाल, म. प्र.

चेहरे पर मुस्कान

वह दो नन्हें हाथ, वह दो नन्हें पैर,
जिनके खेलने का है समय,
जिनके पढ़ने का है समय।
आज कर रहे हैं वह काम।
हमारे लिए तुम्हारे लिए।

● चित्र : ज्योति,
मोतीनगर, उज्जैन, म.प्र.

हो रहा है उनपे जुल्म,
हो रहा है अत्याचार,
तमाशे देख रहे हैं हम सब क्यों
आओ करें हम सब इसको दूर
बाल श्रम का यह जुल्म, यह अत्याचार।

आओ दिलाएँ उनको उनका हक
पढ़ने का, खेलने का और हँसने का
चलो बढ़ाएँ, अपना कदम।
इसे रोकने का ताकि ला सकें,
हम हर चेहरे पर मुस्कान।

● श्रुति चौबे, सातवीं, इलाहाबाद, उ.प्र.

मेरा कुत्ता

मैं और पिन्टू मेरे अंकल के घर गए थे। उसके पहले उनकी लड़की रिंकी को मेरे पापा घर लाए थे। जब मैंने खेत में तरबूज बोए थे। इस वक्त भी तरबूज की बाड़ी की तैयारी हो रही है। मार्च तक तरबूज लग जाएँगे। मेरे कुत्ते का नाम गब्बर है। वह खेत की रखवाली करता है। मैं और सोनू भी। वो दोनों, गब्बर और सोनू बिल्ली के दुश्मन है। बिल्ली को घर में नहीं आने देते हैं।

एक बार गब्बर और सोनू ने बिल्ली को मारा तो वह घर में घुस गई। हमने बिल्ली को घर में से भगा दिया। वह बिल्ली पेड़ पर चढ़ गई। जब वह पेड़ पर से उतरी तो गब्बर उसे मारने लगा। तब वह मुकाबला करने लगी। सोनू छोटा,कमजोर है। उस बिल्ली ने उसके कान में काट लिया तो सोनू चिल्लाकर भाग गया। गब्बर और बिल्ली लड़े तो गब्बर को बिल्ली ने पंजे मारे। गब्बर ने उसकी पूँछ पकड़कर उसे घुमाया। बिल्ली चिल्लाती भाग गई। बिल्ली ने उसे पंजा मारा था। तब से गब्बर हर बिल्ली का दुश्मन बन गया। गब्बर हमारा कुत्ता बहुत अच्छा है। वह ईमानदार है। उसने कभी भी चोरी नहीं की। गाँव के लोग गब्बर की बढ़ाई करते हैं।

● पिंटू व प्रतिभा राठौर, आठवीं, चारुआ, हरदा, म.प्र.

माचिस की तीलियों से आकृतियाँ

माचिस की तीलियों से कई मज़ेदार खेल तुम खेल सकते हो। यहाँ हम इनसे सुन्दर आकृतियाँ बना रहे हैं। तुम भी शामिल हो जाओ। इसके लिए माचिस की तीलियाँ, गोंद या फेवीकोल और कैंची या धारदार चाकू ले आओ।

सबसे पहले इस्तेमाल की हुई माचिस की तीलियाँ इकट्ठी कर लो। तीलियों के जले हुए हिस्से काटकर उनके दोनों सिरे समान कर लो। (चित्र-1) अगर तुम्हारी तीलियाँ अलग-अलग लम्बाई की हैं तो भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

चित्र-1

फिर तीलियों को गोंद से जोड़कर वर्गाकार आकृतियाँ बनाओ। यहाँ दो तरह के वर्ग दिखाए गए हैं, तुम इनमें से किसी भी तरह के वर्ग बना सकते हो। (चित्र-2 और चित्र-3)

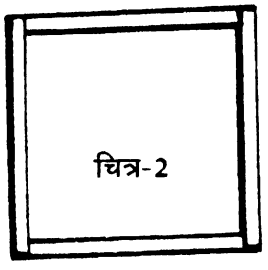

चित्र-2

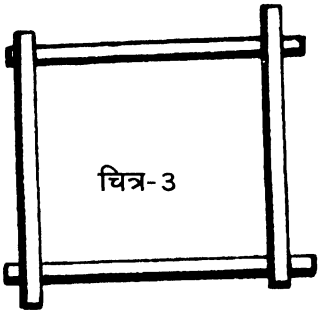

चित्र-3

अब वर्ग के ऊपर चार तीलियों को चित्र-4 या 5 के अनुसार चिपकाओ। यह एक पिरामिड बन जाएगा। इस तरह के कई पिरामिड बनाओ।

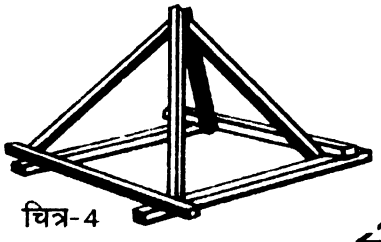

चित्र-4

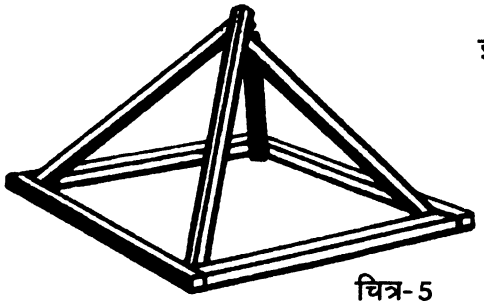

चित्र-5

इन पिरामिडों को जोड़ो, और अपनी मनचाही आकृति बनाओ। एक बार आकृतियाँ जोड़ना शुरू करोगे तो नई-नई आकृतियाँ बना सकोगे।

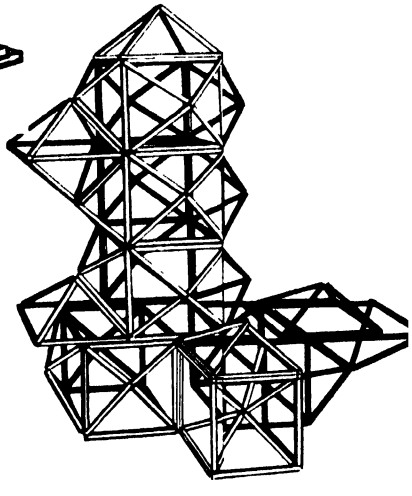

धारावाहिक : बारहवीं किश्त

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। मुर्गी-पालन नाम की एक किताब लेकर वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। वे गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्यूबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ करते हैं। और फिर शुरुआत होती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। इसमें एक बड़ा काम था ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना। मीश्का और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं और अण्डों की देखभाल करते हैं। एक दिन उन दोनों के साथ पढ़ने वाला कोस्त्या, मीश्का के घर आता है। उसे इन्क्यूबेटर के बारे में पता चल जाता है।

रात-रात भर जागकर इन्क्यूबेटर की देखभाल करने के कारण मीश्का को हर कभी और हर कहीं नींद आ जाती थी। और, जब मीश्का सो रहा होता तो कोल्या उसकी तस्वीर बनाता। सोते हुए मीश्का की तस्वीर कोल्या ने अपनी कक्षा के लड़कों को दिखाई तो उन्होंने मीश्का की बहुत हँसी उड़ाई। मीश्का ने गुस्सा होकर कोल्या से कहा कि अब से इन्क्यूबेटर की देखभाल तुम करो। कुछ दिन कोल्या ने देखभाल की। इसी दौरान एक बार ताप बहुत नीचे चला गया। पर जल्द ही उसने ताप को सही स्थिति में पहुँचा दिया। लेकिन उसने यह बात किसी को बताई नहीं। पर उसे मन में यह ज़रूर लगता रहा कि अब अण्डों में से चूज़े नहीं निकलेंगे।

इन्क्यूबेटर पर ध्यान देने के कारण दोनों पढ़ाई नहीं कर पा रहे थे। उन्हें कम नम्बर मिलते हैं। उनकी कक्षा के सभी साथी छुट्टी के बाद इन दोनों दोस्तों को रोककर कारण पूछते हैं। तब कोस्त्या सबको बता देता है कि ये लोग इन्क्यूबेटर में लगे हैं। फिर क्या था, सभी मिलकर ताप की निगरानी करने में मदद देने को तैयार हो जाते हैं।

प्रकृति प्रेमी मण्डल के सारे सदस्य इन्क्यूबेटर की देखरेख में लग जाते हैं। वे इसके लिए टाइम-टेबिल भी बनाते हैं। दोस्तों की मदद मिलने से मीश्का और कोल्या को थोड़ी राहत मिलती है। वे पढ़ाई की तरफ भी ध्यान देना शुरू कर देते हैं। और प्रकृति प्रेमी मण्डल का अपना काम भी पूरा कर लेते हैं। अब आगे . . . .

सब से कठिन दिन

मिल-जुलकर काम करने में मज़ा भी आया और समय भी जल्दी कट गया। आखिर इक्कीसवाँ दिन आ गया। उस दिन शुक्रवार था। चूज़ों के लिए सभी तैयारियाँ हो चुकी थीं। हमने कबाड़खाने में से एक बड़ा बर्तन ढूँढ निकाला और उसके अन्दर नमदे का अस्तर बिछा दिया, ताकि उसमें नवजात चूज़ों को गरम रखा जा सके। अब यह गरम पानी के बर्तन पर रखा हुआ था और पहले चूज़े के निकलने के इंतज़ार में था।

मीश्का और मैं पिछली रात को भी इन्क्यूबेटर के पास रहना चाहते थे, लेकिन वादिक जैत्सेव ने अपनी माँ से रात की ड्यूटी देने की आज्ञा ले ली थी और वह हमें अपने पास आने देने के लिए तैयार नहीं था। "मेरे ड्यूटी पर होते तुम्हें यहाँ मँडराने की ज़रूरत नहीं है," वह बोला। "तुम जाकर सो सकते हो।"

''लेकिन चूज़ों ने रात में ही अण्डों में से निकलना शुरू कर दिया, तो?'' हमने पूछा।

''उसमें चिंता की क्या बात है? चूज़े के निकलते ही मैं बर्तन में छोड़ दूँगा और सूखने दूँगा।''

''खबरदार, ऐसे ही मत टपका देना,'' मैंने घबराकर कहा। ''चूज़ों को बड़ी नरमी से हाथ लगाना चाहिए।''

''अरे घबराओ मत, मैं ऐसा ही करुँगा। अब जाओ और सो जाओ। भूलो मत कि कल तुम्हारी ड्यूटी है। इसलिए रात को अच्छी तरह आराम करना ठीक रहेगा।''

''ठीक है,'' मीश्का मान गया। ''लेकिन, भाई इतना करो कि चूज़ों का निकलना शुरू होते ही हमें जगा देना। देखो न, कितने लम्बे समय से हम इसी का इन्तज़ार कर रहे हैं।''

वादिक ने हामी भरी। हम सोने चले गए। लेकिन चूज़ों की चिन्ता में मुझे बहुत देर तक नींद ही नहीं आई। दूसरे दिन सवेरे मैं बहुत जल्दी जाग उठा और तुरन्त मीश्का के घर दौड़ता गया। वह भी जाग चुका था और इन्क्यूबेटर के पास बैठकर अण्डों को देख रहा था।

''अब तक तो मुझे कोई आसार नज़र नहीं आता।''

''शायद अभी समय नहीं हुआ,'' वादिक बोला।

वादिक जल्दी ही अपने घर चला गया, क्योंकि रात बीत गई और अब हमारी ड्यूटी शुरू हो गई थी। उसके जाते ही मीश्का ने एक बार फिर सभी अण्डों को देखने का फैसला किया। हमने उनको पलटकर यह देखना शुरू किया कि कहीं अन्दर से किसी चूज़े ने अपनी चोंच से कोई छोटा-सा छेद बनाया है या नहीं। लेकिन किसी भी खोल पर कोई भी छेद नहीं था। हमने इन्क्यूबेटर को बन्द कर दिया और बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे।

''मान लो कि हम कोई अण्डा तोड़कर देख ही लें कि भीतर चूज़ा है या नहीं?'' मैंने सुझाव रखा।

''नहीं, अभी ऐसा नहीं करना चाहिए,'' मीश्का ने कहा। ''चूज़ा अभी भी अपनी खोल में से ही साँस लेता है, अपने फेफड़ों से नहीं। जैसे ही वह फेफड़ों से साँस लेना शुरू कर देगा, वह अपनी खोल खुद तोड़

डालेगा। अगर हमने खोल को जल्दी तोड़ दिया, तो चूज़ा मर जाएगा।''

''लेकिन अन्दर वे ज़रूर जीवित हैं,'' मैंने कहा। ''अगर तुम ध्यान से सुनो, तो शायद भीतर उनको हिलते-डुलते भी सुन लो।''

मीश्का ने इन्क्यूबेटर से एक अण्डा उठाया और उसको अपने कान से लगा लिया। मीश्का के ऊपर झुककर मैंने भी अपना कान उसके पास लगा दिया।

''खामोश!'' मीश्का गुर्राया। ''मेरे कान के पास तुम इसी तरह घुर्राटे लेते रहे, तो मैं कैसे कुछ सुन सकूँगा!''

मैंने अपनी साँस रोक ली। अब एकदम खामोशी थी, इतनी खामोशी कि मेज पर रखी घड़ी की टिक-टिक ही हम सुन सकते थे। यकायक दरवाज़े की घण्टी बज उठी। मीश्का उछल पड़ा और अण्डा उसके हाथ से लगभग गिर ही तो पड़ा। मैंने दौड़कर दरवाज़ा खोला। वीत्या आया था। वह जानना चाहता था कि चूज़ों ने निकलना शुरू किया या नहीं।

''नहीं,'' मीश्का बोला। ''अभी देर है।''

''ठीक है, स्कूल जाने के पहले मैं फिर देख जाऊँगा।'' वीत्या बोला।

वह चला गया और मीश्का ने फिर अण्डे को बाहर निकालकर कान से लगा लिया। वह काफी देर तक उसी तरह अपनी आँखें बन्द किए-किए ध्यानपूर्वक सुनता रहा।

''मुझे किसी भी तरह की कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती,'' वह आखिर में बोला।

मैंने भी अण्डे को लेकर सुना। मुझे भी बिल्कुल आवाज़ नहीं सुनाई दी।

''भ्रूण नष्ट तो नहीं हो गया?'' मैंने कहा। ''हमें औरों को देखना चाहिए।''

हमने एक-एक करके सभी अण्डों को बाहर निकाला और सब को ध्यान से सुना, लेकिन उनमें से किसी ने भी जीवन का कोई भी लक्षण प्रकट नहीं किया।

''सब के सब ही तो नष्ट नहीं हो सकते न, या हो सकते हैं?'' मीश्का बोला। ''उनमें से कम से कम एक तो ज़िन्दा होना चाहिए।''

घंटी फिर बज उठी। इस बार सेन्या बोब्रोव आया था। ''तुम इतनी सुबह क्या कर रहे हो?'' मैंने उससे पूछा।

''मैं पूछने आया था कि चूज़े ठीक से निकल रहे हैं?''

''वे निकल ही नहीं रहे हैं,'' मीश्का ने उत्तर दिया। ''अभी समय नहीं हुआ।'' उसके बाद सेर्योजा आया।

''क्यों, कोई चूज़ा निकला कि नहीं?''

''तुम बड़े उतावले हो,'' मीश्का ने कहा। ''तुम क्या यह समझते हो कि पौ फटते ही चूज़े निकलना शुरू कर देंगे? अभी बहुत देर है।''

सेर्योजा और सेन्या कुछ देर बैठे और फिर चले गए। मीश्का ने और मैंने फिर से अण्डों की आवाज़ सुनना शुरू किया। ''नहीं, कोई फायदा नहीं,'' वह दुख से बोला। ''मुझे कुछ भी नहीं सुनाई देता।''

''कहीं हमें बुद्धू बनाने के लिए तो वे चुप नहीं हैं?'' मैंने राय दी।

''अब तक तो उनको खोल को तोड़ना शुरू कर ही देना चाहिए था।''

फिर यूना फिलीप्पोव और स्तासिक लेव्शिन आए और उनके बाद वान्या लोज्किन आया। एक के बाद एक वे आते ही रहे और स्कूल जाने के समय तक तो ऐसा लगने लगा मानो एक आम सभा ही हो रही हो। हमने माया को बुलाया और बताया कि हमारे स्कूल में रहते समय अगर चूज़े निकलना शुरू कर दें, तो क्या करना चाहिए। इसके बाद हम सब के साथ स्कूल चले गए।

मैं नहीं जानता कि वह दिन हमने कैसे काटा। यह हमारी ज़िंदगी का सब से कठिन दिन था। ऐसा लग रहा था मानो कोई जान-बूझकर समय को लम्बा कर रहा था और हर घण्टे को रोज़ के मुकाबले दस गुना लम्बा कर रहा था।

हम सब को इस बात का बहुत डर था कि चूज़े हमारे स्कूल में रहते समय ही निकलना शुरू कर देंगे और अकेली माया कुछ न कर सकेगी। आखिरी घण्टा तो सब से बुरा था। लगता था मानो कभी खत्म ही नहीं होगा। इतनी देर हो गई थी कि हमें हैरानी होने लगी कि कहीं ऐसा तो न हो कि हमें घण्टे की आवाज़ ही न सुनाई पड़ी हो। फिर हमने सोचा कि शायद घण्टा

खराब हो गया हो, या स्कूल की दरबान दून्या चाची आखिर का घण्टा बजाना भूलकर घर ही चली गई हो। और हमें अब कल सुबह तक स्कूल में ही बैठे रहना पड़ेगा।

सारी की सारी क्लास बेचैन और बेबस हो रही थी। हर कोई जेन्या स्कवोर्त्सोव के पास कागज़ की चिटें भेज-भेजकर पूछ रहा था कि कितने बज गए। लेकिन किस्मत की बात, उस दिन जेन्या अपनी घड़ी घर पर ही छोड़ आया था। क्लास में इतना शोर था कि अलेक्सांद्र येफ्रेमोविच को कई बार रुककर खामोश रहने के लिए कहना पड़ा। लेकिन शोर होता रहा। आखिर मीश्का ने यह कहने के लिए हाथ उठाया कि घण्टा खत्म हो चुका होगा, लेकिन तभी घण्टी बज गई और हर कोई उछलकर दरवाज़े की ओर झपटा। अलेक्सांद्र येफ्रोमोविच ने हमें फिर से बैठा दिया और कहा कि किसी को भी शिक्षक के पहले बाहर नहीं जाना चाहिए। फिर वह मीश्का की ओर मुड़े, ''तुम मुझसे कुछ पूछना चाहते थे?''

''जी नहीं, मैं सिर्फ यह कहना चाहता था कि घण्टा खत्म हो गया है।''

''लेकिन तुमने तो घण्टी बजने के पहले ही हाथ उठाया था, न?''

''मैंने सोचा कि शायद घण्टी खराब हो गई है।''

अलेक्सांद्र येफ्रोमोविच ने अपना सिर हिलाया, रजिस्टर उठाया और क्लास के बाहर चले गए। लड़के बरामदे की ओर तथा सीढ़ियों पर से नीचे की तरफ झपटे। फाटक के पास काफी भीड़ थी, लेकिन मैंने और मीश्का ने उसमें से रास्ता निकाल लिया। हम लड़कों के आगे-आगे सड़क पर सीधे दौड़ते चले गए। लड़कों की पूरी की पूरी कतारें हमारे पीछे-पीछे भागी आ रही थीं।

पाँच ही मिनट में हम घर में थे। माया अपनी जगह पर बैठी अपनी गुड़िया ज़िनाईदा के लिए एक नई पोशाक सी रही थी। ''कुछ हुआ?'' हमने पूछा।

''कुछ नहीं।''

''इन्क्यूबेटर को देखे तुम्हें कितनी देर हो गई?''

''बहुत देर हुई। अण्डे पलटते वक्त देखा था।''

मीश्का इन्क्यूबेटर के पास गया। अपनी गर्दनें झुकाए और पंजों के बल खड़े लड़कों ने उसे घेर रखा था। वान्या लोज्किन अच्छी तरह देखने के लिए कुर्सी पर चढ़ गया था, वह उससे गिर पड़ा और साथ में ल्योशा कूरोच्किन को भी लगभग गिराता गया। लेकिन मीश्का इन्क्यूबेटर को खोलने की हिम्मत नहीं बाँध सका। उसको देखते डर लग रहा था।

''अरे, खोलो भी उसे! तुम किस चीज़ का इंतज़ार कर रहे हो?'' किसी ने कहा। आखिर मीश्का ने ढक्कन उठाया। बड़ी सफेद गोलियों जैसे अण्डे पहले ही की तरह पड़े हुए थे।

कुछ देर मीश्का चुपचाप खड़ा रहा, फिर उसने सावधानी से उनको एक-एक करके सभी ओर से देखते हुए पलट दिया।

''एक भी दरार नहीं है!'' उसने भारी दिल से बताया।

(अगले अंक में जारी)

सभी चित्र : सौरभ दास

लकड़ी की काठी

पिछले पंद्रह-सोलह वर्षों में फिल्मों में बच्चों के लिए जो गीत लिखे गए हैं, उनमें यह सबसे लोकप्रिय गीत है। 1982 में बनी मासूम फिल्म का यह गीत तीन बच्चों (अनुराधा, उर्मिला, जुगल) पर फिल्माया गया है।उनमें से उर्मिला मातोंडकर और जुगल हंसराज उस समय बाल कलाकार थे जो आज भी फिल्मों और टी.वी. सीरियलों में काम करते हैं।

गुलज़ार

लकड़ी की काठी, काठी पे घोड़ा
घोड़े की दुम पे जो मारा हथौड़ा
दौड़ा दौड़ा दौड़ा, घोड़ा दुम उठा के दौड़ा
लकड़ी की काठी . . .

घोड़ा पहुँचा चौक में, चौक में था नाई
घोड़े जी की नाई ने हजामत जो बनाई
चकबक चकबक चकबक चकबक
दौड़ा दौड़ा दौड़ा, घोड़ा दुम उठा के दौड़ा
लकड़ी की काठी . . .

घोड़ा था घमण्डी, पहुँचा सब्ज़ी मण्डी
सब्ज़ी मण्डी बर्फ पड़ी थी, बर्फ में लग गई ठण्डी
टकबक टकबक टकबक टकबक
दौड़ा दौड़ा दौड़ा, घोड़ा दुम उठा के दौड़ा
लकड़ी की काठी . . .

चित्र :नुपुर

घोड़ा अपना तगड़ा है, देखो कितनी चर्बी है
चरता है महरौली में पर घोड़ा अपना अरबी है
बाग छुड़ा के दौड़ा घोड़ा, दुम उठा के दौड़ा
लकडी की काठी . . .

फिल्म : मासूम
गीतकार : गुलज़ार
संगीतकार : राहुल देव बर्मन
गायक : विनीता मिश्रा, गुरप्रीत कौर, गौरी बापट

आलसी पहिए

रेलगाड़ी के एक डिब्बे के पहिए बदलने थे। डिपो के पास पटरी पर दो नए पहिए रखे हुए थे। एक मिस्त्री उनके पास आकर खड़ा हो गया। उसने इन पहियों को धकेलने की कोशिश की मगर वे नहीं हिले। उसने पूरी ताकत लगाकर उनको धकेलना चाहा, पर पहिए टस से मस नहीं हुए। मिस्त्री बहुत मुश्किल से इन पहियों को हिला पाया। आलसी पहिए धीरे-धीरे पटरी पर चलने लगे। डिब्बे के पास पहियों को रुक जाना चाहिए था पर वे आगे ही बढ़े जा रहे थे। मिस्त्री ने पूरी ताकत लगाकर उनको रोकने की कोशिश की पर पहिए रुक नहीं रहे थे। वह बड़ी मुश्किल से उन जिद्दी पहियों को रोक पाया।

दुनिया में केवल पहिए ही आलसी और जिद्दी नहीं होते हैं।

गीता ने सीमेंट के फर्श पर दो गोलियाँ रख दीं – एक भारी और दूसरी हल्की। जब उसने भारी गोली को लुढ़काया, वह हल्की गोली से जा टकराई परन्तु भारी गोली पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वह आगे लुढ़कती रही। अब गीता ने इसके विपरीत हल्की गोली को लुढ़काया। वह भारी गोली से जा टकराई। हल्की गोली इतनी भारी तथा आलसी गोली का सामना कैसे करती। वह खुद टप्पा खाकर एक तरफ लुढ़क गई।

इससे यह पता चलता है कि भारी वस्तुएँ हल्की वस्तुओं की तुलना में अधिक 'आलसी' होती हैं।

एक बार बच्चे बस में बैठे कहीं जा रहे थे। वे पीछे की सीट पर बैठे हुए थे। बस में बहुत कम ात्री थे। बस के फर्श पर बच्चों ने अपने पास एक द रख दी थी। अचानक चौराहे पर लालबत्ती ल उठी। ड्राइवर ने ब्रेक लगाई और बस रुकने लगी। किन्तु गेंद रुक जाना नहीं चाहती थी। वह पिछली सीट से लुढ़कती-लुढ़कती ड्राइवर की केबिन के पास आकर रुक गई। चौराहे पर कुछ देर ठहरने के बाद बस

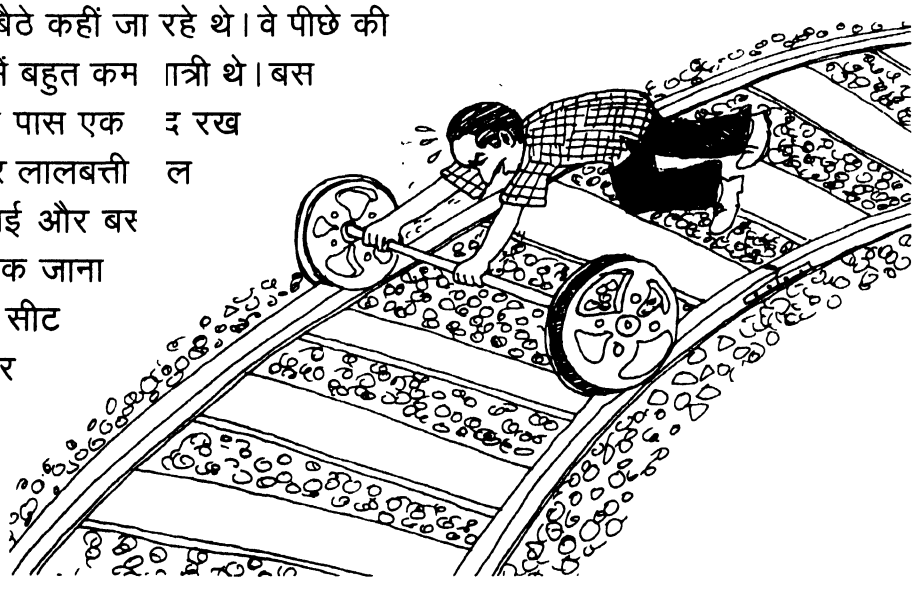

फिर चल पड़ी। पर गेंद तो आलसी थी, वह अपनी जगह से तुरन्त हिलना नहीं चाहती थी। बस आगे बढ़ती रही और अब गेंद पीछे की ओर लुढ़कती हुई फिर बच्चों के पास आ गई। यदि और सही कहें तो गेंद कहीं भी नहीं गई।

वस्तुओं का कोई दोष नहीं कि वे 'आलसी' तथा 'जिद्दी' होती हैं। वस्तुएँ नाराज़ न हों इसलिए भौतिकविद 'आलस्य' तथा 'जिद' शब्दों की जगह 'जड़त्व' शब्द का प्रयोग करते हैं। जड़त्व सभी वस्तुओं में मौजूद है।

एक बार मोहन पैरों में रोलर बाँधे सड़क के किनारे पर तेज़ी से चल रहा था। रास्ते में एक छोटा गड्ढा आ गया। रोलर रुक गए पर जड़त्व के कारण मोहन आगे बढ़ा जा रहा था। बढ़ा क्या, वह तो सचमुच उड़ा जा रहा था। वह धड़ाम से गिरा। उसने अपने हाथ आगे कर लिए थे जिससे कि मुँह को चोट न लगे। मोहन उठ बैठा। फिर भी उसके माथे पर गूमड़ा निकल आया था। यह जड़त्व के कारण ही हुआ।

एक बार हम कुछ लोग दौड़ रहे थे। अचानक मेरे पैर किसी चीज़ में उलझ गए। पैर तो रुक गए पर मैं जड़त्व के कारण आगे भागे जा रही थी, जब तक कि ज़मीन पर न गिर पड़ी।

जड़त्व एक ऐसा विशेष गुण है जो सभी वस्तुओं में विद्यमान होता है। दुनिया में एक भी तो ऐसी वस्तु नहीं है जिसमें जड़त्व न हो।

तुम्हारी भी शायद जड़त्व से मुलाकात हुई होगी।

कभी-कभी इससे उलटी बात भी होती है। जैसे बस खड़ी हुई हो और फिर झटके से चल पड़े। बस तो चल पड़ी है पर यात्री अभी भी अपनी-अपनी जगहों पर स्थिर बैठे हुए हैं जिसके कारण उनका शरीर पीछे की ओर झुक जाता है।

खास बात यह है कि जड़त्व केवल उसी समय ही प्रकट नहीं होता है जब कोई गतिशील पिण्ड धीरे-धीरे रुकने लगता है। वह तब भी प्रकट होता है जब कोई स्थिर पिण्ड चलना शुरू करता है। जब भी किसी पिण्ड की गति अथवा गति की दिशा में कोई परिवर्तन आता है, जड़त्व प्रकट हो जाता है।

● **'नन्हें–मुन्नों के लिए भौतिकी' से साभार**

● **चित्र : शिवेंद्र पांडिया**

कठपुतली

चकमक में तुमने पहले भी कठपुतली बनाना सीखा है। कठपुतली बनाना और नचाना बहुत ही मज़ेदार खेल है। चलो, इस बार एक और कठपुतली बनाते हैं।

सबसे पहले तीन-चार चीज़ें ज़रूर जुटा लेना। लकड़ी के दो पटिए, एक अंदाज़न चार इंच लम्बा डेढ़ इंच चौड़ा और आधा इंच मोटा। दूसरा तीन इंच लम्बा और लगभग एक इंच चौड़ा और इतना ही मोटा। पाँच-छह दो मुँही कील और पतली रस्सी या मज़बूत धागा। बेशरम की डंडियाँ, सरकंडा या ठठेरे की सूखी डंडियाँ।

● सबसे पहले हाथ बनाते हैं। बेशरम की डंडियों के चार 2–2 इंच लम्बे और चार 3–3 इंच लम्बे टुकड़े कर लो। सूखी बेशरम वैसे तो खोखली होती है। अगर नहीं हो तो एक तार डालकर उसमें आसानी से सुराख किया जा सकता है।

● दो-दो इंच वाले दो-दो टुकड़े रस्सी में पिरो लो। ये हाथ बन गए। रस्सी थोड़ी लम्बी लेना। अब तीन-तीन इंच के दो-दो टुकड़ों को रस्सी में पिरोकर पाँव बना लो।

● अब छोटे पटिए के एक सिरे पर मोटाई पर एक कील ठोंक दो। कील का थोड़ा हिस्सा बाहर रखना। इसी पटिए के नीचे की तरफ भी कील ठोंक लो।

● इसी तरह बड़े पटिए में मोटाई की तरफ एक कील ठोंक लो। इस कील और छोटे पटिए की कील को बाँध दो। यह हो गए तुम्हारी कठपुतली के सिर और धड़।

● अब धड़ में नीचे दोनों ओर दो कीलें ठोंककर पाँव बाँध दो। धड़ के बगल में गर्दन की तरफ दो कील ठोंककर दोनों हाथ बाँध दो। इस कठपुतली को नचाने के लिए कम-से -कम तीन रस्सियाँ या धागे बाँधने होंगे। एक धागा सिर के ऊपरी किनारे पर कील ठोककर बाँध दो। और दो धागे दोनों हाथों के सिरे पर बाँधो। सिर की रस्सी से सिर नचा सकते हो और हाथ की रस्सी के छोरों से हाथ।

● रुको भाई! अभी कठपुतली पूरी तरह कहाँ बनी है। अभी तो उसे रंग बिरंगे कपड़ों की कतरन से सजाना है। चेहरे वाले पटिए पर दो बटन या बिन्दी चिपकाकरआँखें बनाओ। बड़े बटन मिल जाएँ तो उससे मुँह बना सकते हो नहीं तो रंग से बनाओ। अब देखो क्या जँच रही है कठपुतली। तो नचाएँ।

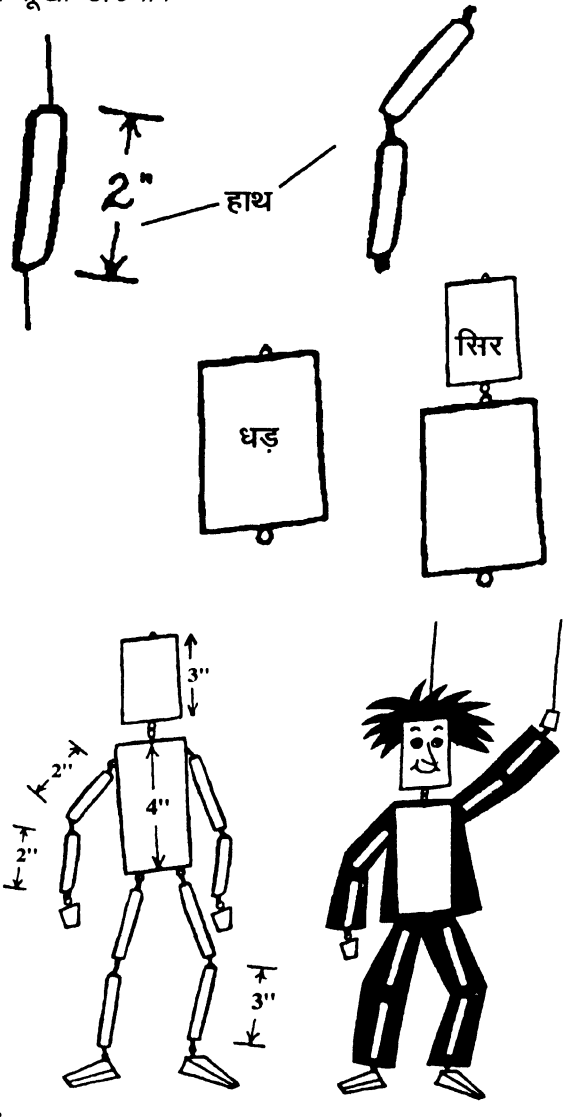

कहानी

फरडीनैंड

● मनरो लीफ

बहुत समय पहले की बात है। स्पेन में एक छोटा-सा बैल रहता था। उसका नाम फरडीनैंड था।

जिन बैलों के साथ वो रहता वे सभी दौड़ते-कूदते और मत्थे से मत्था लड़ाते। परन्तु फरडीनैंड ऐसा कभी नहीं करता था।

उसे चुपचाप बैठकर फूलों की खुशबू सूँघना ही अच्छा लगता था।

उसे एक जगह बहुत पसन्द थी। वो जगह घास के मैदान में कॉर्क के पेड़ के नीचे थी। वो उसका सबसे प्रिय पेड़ था। वो सारे दिन पेड़ की छाँव में बैठकर उसके फूलों की खुशबू सूँघा करता।

उसकी माँ एक गाय थी। कभी-कभी माँ उसके बारे में चिन्ता करती थी। उसे डर था कि अकेलेपन के कारण कहीं फरडीनैंड उदास न हो जाए।

''तुम दूसरे बैलों के साथ दौड़ते और खेलते क्यों नहीं हो? तुम औरों के साथ सींग क्यों नहीं लड़ाते हो?'' वो पूछती।

परन्तु फरडीनैंड उत्तर में बस अपना सिर हिला देता और कहता, ''मुझे बस यहीं पर आराम से बैठना और फूलों की खुशबू सूँघना अच्छा लगता है।''

उसकी माँ एक साधारण गाय थी। परन्तु थी वो बहुत समझदार। वो हमेशा इस बात का ध्यान रखती कि फरडीनैंड उदास न हो। इसलिए वो उसे पेड़ के नीचे अकेले बैठे रहने देती थी।

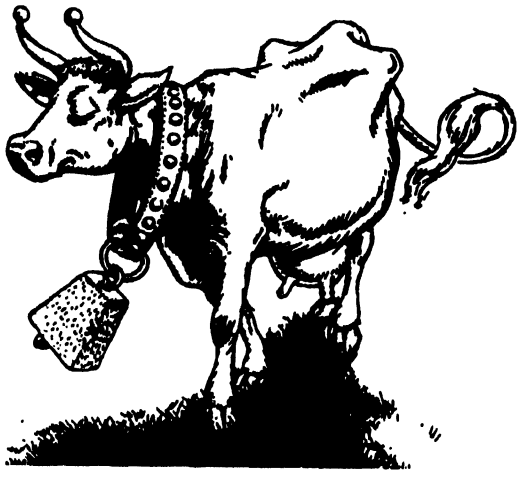

कम-से-कम वो वहाँ खुश तो था।

धीरे-धीरे साल गुज़रते गए। समय गुज़रने के साथ फरडीनैंड बड़ा और ताकतवर बन गया।

बाकी बैल जो उसके साथ घास के मैदान में बड़े हुए, वे दिन भर एक-दूसरे के साथ लड़ते रहते। वे मत्थे से मत्था लड़ाते और एक-दूसरे को अपने पैने सींग चुभाते।

उन सब की बस एक ही तमन्ना थी। कोई उन्हें स्पेन की राजधानी मैड्रिड में बैल की लड़ाई के लिए चुन ले।

परन्तु फरडीनैंड की लड़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसे केवल कॉर्क के पेड़ के नीचे बैठकर उसके फूलों की खुशबू सूँघना ही अच्छा लगता था।

एक दिन अजीबोगरीब टोपियाँ पहने हुए पाँच आदमी आए। वे सबसे बड़े, तेज़ और ताकतवर बैल को चुनने के लिए आए थे। जिससे कि उसे बैल की लड़ाई के लिए मैड्रिड ले जाया जा सके।

बाकी सारे बैल अपनी ताकत का परिचय देने के लिए दौड़ने लगे, कूदने लगे और एक-दूसरे को अपने पैने सींगों से गोदने लगे। बैलों को लगा कि टोपी वाले समझेंगे कि वे बहुत ही शक्तिशाली और बलवान हैं और वे चुन लिए जाएँगे।

फरडीनैंड जानता था कि उसे कोई नहीं चुनेगा। वैसे उसे चुने जाने की कोई परवाह भी नहीं थी। इसलिए वो अपने प्रिय कॉर्क के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया।

वो जहाँ बैठा उसने उस जगह को सँभालकर नहीं देखा। ठण्डी और हरी घास में वो एक ततैया के ऊपर बैठ गया।

मान लो तुम एक ततैया होते और कोई बैल तुम्हारे ऊपर आकर बैठ जाता। तब तुम क्या करते? तुम बैल को डंक मारते। यही सलूक उस ततैया ने फरडीनैंड के साथ किया।

हाय! इतना भयंकर दर्द! फरडीनैंड एक ज़ोरदार चीख के साथ उछला। वो चीखता-चिल्लाता पैने सींगों से ज़मीन को खोदता हुआ पागलों की तरह दौड़ने लगा।

फरडीनैंड को देखकर टोपीवाले पाँचों लोग खुशी से उछल पड़े। उन्हें अब सबसे बड़ा, ताकतवर और बहादुर बैल मिल गया था। मैड्रिड में, बैल की लड़ाई के लिए वो एकदम फिट था।

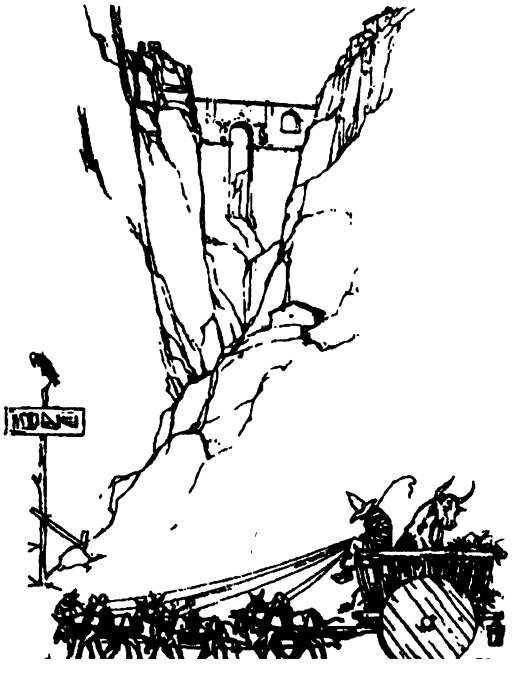

उन्होंने फरडीनैंड को एक बहुत बड़ी घोड़ा गाड़ी में बैठाया और उसे मैड्रिड ले गए।

वो दिन एक बड़े मैले जैसा था। सब तरफ झण्डे लहरा रहे थे और हवा में बैंड-बाजों का संगीत गूँज रहा था। मेले में आई महिलाओं के बालों में सुगंधित फूलों के गजरे सजे थे।

लड़ाई के गोल मैदान में एक बड़ी परेड निकली। सबसे पहले बैंडेरीलो सिपाहियों का दस्ता आया। उनके पास लम्बे और नुकीले भाले थे जिनमें लम्बे रिबन लगे थे। इन भालों से बैल को भोंका जाना था। इससे दर्द के मारे बैल पागल हो जाता था।

फिर पिकाडोर सिपाहियों का दस्ता आया। वो सभी घोड़ों पर सवार थे और उनके हाथों में बैल को मारने के लिए बड़े लम्बे-लम्बे भाले थे।

अंत में मेटाडोर यानी बैल से लड़नेवाला आया। उसका रंग-रूप एकदम रोबीला था। उसे अपनी खूबसूरती पर नाज़ था। शायद इसीलिए उसने सबसे पहले झुककर महिलाओं को सलाम किया। वह लाल टोपी पहने था और उसके हाथ में एक तलवार थी। इसी तलवार से बैल को मारा जाना था।

अंत में बैल आया। कौन-सा बैल आया यह तो तुमको अच्छी तरह पता ही है, क्यों है न?

फरडीनैंड!

सब लोग फरडीनैंड को देखकर डर गए। उन्होंने उसे नाम दिया – खूँखार फरडीनैंड। बैंडेरीलो उसे देखकर सहम गए। पिकाडोरों की उसे देखते ही सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और बेचारा मेटाडोर तो उसे देखकर डर के मारे थर-थर काँपने लगा।

फरडीनैंड दौड़कर मैदान के बीच में पहुँचा। उसे देखकर लोग चिल्लाने लगे और ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाने लगे।

सबको लगा कि देखने में खूँखार फरडीनैंड बहादुरी से लड़ेगा और योद्धाओं को अपने पैने सींगों से मारेगा।

परन्तु फरडीनैंड के मन में कुछ और ही विचार था। जब वो लड़ाई के मैदान के बीचों-बीच पहुँचा तो उसे औरतों के बालों में लगे सुन्दर फूल दिखाई दिए। वो मैदान के बीच में चुपचाप बैठ गया और फूलों की मनमोहक खुशबू सूँघने लगा।

फरडीनैंड ने अपने मन में पक्का निश्चय किया। ये लोग चाहे कुछ भी करें मैं ना तो किसी को मारूँगा और ना ही किसी से लड़ूँगा।

ये देखकर बैंडेरीलों का दिमाग खराब हो गया और पिकाडोर पागल हो गए। बेचारा मेटाडोर तो एकदम आपे से बाहर हो गया। लाल टोपी पहनकर अपनी तलवार के करतब दिखा पाना अब उसके लिए सम्भव न था।

अंत में लोगों को झक-मारकर फरडीनैंड को वापिस घर भेजना पड़ा।

जहाँ तक मेरी जानकारी है फरडीनैंड अभी भी वहीं बैठा है, अपने प्रिय कॉर्क के पेड़ के नीचे और चुपचाप उसके फूलों की खुशबू सूँघ रहा है। वो वाकई में बड़ा खुश है।

अनुवाद : अरविन्द गुप्ता

चित्र : रिचर्ड लौसन

(भारत ज्ञान विज्ञान समिति की जनवाचन बाल पुस्तकमाला से साभार)

खेल दुनिया भर के

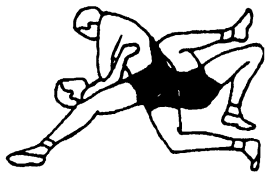

इस बार

कुश्ती... यह खेल हमारे देश में हर जगह खेला जाता है। छोटे से छोटे गाँव से लेकर बड़े से बड़े शहर तक।

इसकी लोकप्रियता के कई कारण हैं। एक तो इसके लिए हमें किसी भी खेल सामान की ज़रूरत नहीं पड़ती। दूसरे इसे खेलने के लिए दस-बारह खिलाड़ियों को जोड़ने की ज़रूरत भी नहीं। न लम्बे-चौड़े मैदान की ज़रूरत। कुश्ती लड़ने से अच्छा व्यायाम तो होता ही है ऊपर से अन्य खेलों जितना ही मज़ा और रोमांच आखिर तक बना रहता है।

कुश्ती सिर्फ गाँव और शहरों में ही नहीं खेला जाता। इसकी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ लगभग साल भर चलती रहती हैं। ओलम्पिक में भी इसके मुकाबले होते हैं। तुम्हें मालूम ही होगा! ओलम्पिक में हॉकी में तो हमें खूब पदक मिले हैं। लेकिन हॉकी के अलावा हम अब तक कुल तीन ही पदक जीत पाए हैं। इन तीन में से एक पदक इसी कुश्ती में मिला था।

यह 1952 हेलसिंकी ओलम्पिक की बात है जब के.डी.जाधव ने कांस्य पदक जीता था।

इतिहास : कुश्ती सबसे पुराने एक -दो खेलों में से है। कुछ प्राचीन मूर्तियों और भित्तिचित्रों में कुश्ती के दाँव-पेंचों के चित्र मिले हैं। इन चित्रों से अनुमान लगाया जाता है कि कुश्ती अब से तकरीबन 4750 साल पुराना खेल है। दुनिया के लगभग हर देश में सैकड़ों सालों से इसे खेला जाता है। पहले ओलम्पिक खेल ईसा से सात सौ छियत्तर साल पहले हुए थे। कुश्ती उनमें भी शामिल थी। सूडान की एक जनजाति 'नूबा' आज भी 'कुश्ती खेल त्यौहार' मनाती है जिसमें कुश्ती के साथ कई दिनों तक जश्न मनाया जाता है।

वर्तमान में कुश्ती की दो शैलियाँ खूब प्रचलित हैं। एक फ्रीस्टाइल कुश्ती और दूसरी ग्रीको-रोमन शैली। इस दूसरी शैली का जन्म 1860 ईस्वी के आसपास ही हुआ है। फ्रीस्टाइल कुश्ती अमेरिका में खूब पनपी और वहीं सर्वाधिक लोकप्रिय भी हुई। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपने शहर के चर्चित पहलवान थे। जबकि ग्रीको रोमन शैली यूरोप में खूब लोकप्रिय है।

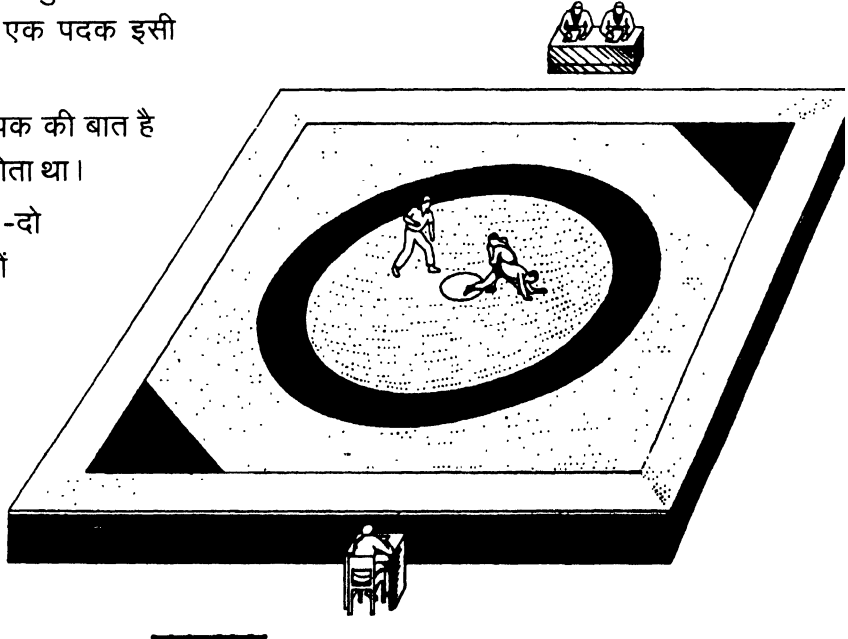

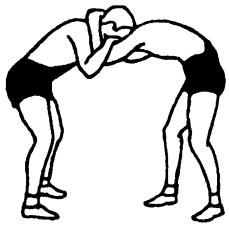

खड़ी स्थिति में

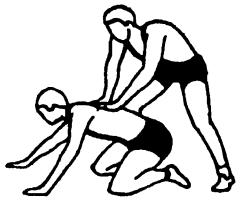

घुटनों पर झुकी स्थिति में

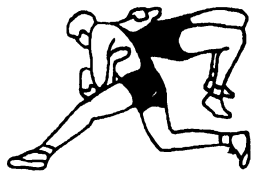

पुल

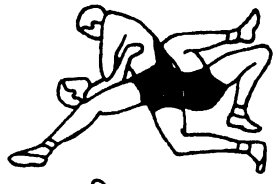

चित

इन दोनों शैलियों के अलावा एक और तरह की कुश्ती भी है। इसे सूमो कुश्ती कहते हैं। इसका जन्म जापान में सातवीं सदी में हुआ था। हालाँकि इसे काफी समय बाद मान्यता मिली। ओलम्पिक में इसे अभी शामिल नहीं किया गया है।

कुश्ती की अंतर्राष्ट्रीय संस्था 1912 में बनी जिसका नाम अंतर्राष्ट्रीय एमेच्योर कुश्ती संघ है।

नियम : गाँव में जब हम कुश्ती लड़ते थे तो दोनों पहलवानों की यही कोशिश रहती थी कि अपने विरोधी पहलवान को किसी भी तरह बस चित कर दें। लेकिन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुश्ती निश्चित नियमों के तहत लड़ी जाती है। कुश्ती का मैदान यानी अखाड़ा भी नाप-तौलकर बनाया जाता है। चलो पहले इन नियमों को ही जान लें।

साढ़े तीन मीटर त्रिज्या का एक गोला होता है। कुश्ती इसी गोले में होती है। इस गोले के बाहर दो चौखाने और होते हैं। पहला इस गोले से एक मीटर बाहर की तरफ और दूसरा इस चौखाने से डेढ़ मीटर बाहर की ओर।

दर्शक इस चौखाने के अन्दर नहीं आ सकते। गाँव या शहरों के अखाड़ों में तो सामान्यत: मिट्टी को खोदकर उसके कंकड़-पत्थर बीनकर उसे नरम बनाते हैं। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय मुकाबलों के लिए इसके बदले नरम-नरम गद्दे इस्तेमाल किए जाते हैं।

पोशाक 'वनपीस' यानी एक ही टुकड़े की बनी हुई होती है। पहलवान घुटने में चोट से बचने के लिए 'नी-केप' पहन सकता है। जूते भी बिना एड़ी और कीलों के होना चाहिए। पहलवान अपने बदन पर तेल, ग्रीस या कोई भी चिकनी चीज़ नहीं लगा सकता। मुकाबले से पहले उसे नाखून और दाढ़ी भी कटवानी पड़ती है।

कुश्ती के अंतर्राष्ट्रीय मुकाबले तीन-तीन मिनिट की दो पारियों में होते हैं। दोनों पारियों के बीच एक मिनिट का आराम होता है। अगर इन दोनों पारियों में भी कोई पहलवान चित नहीं हो पाता तो फैसला अंकों के आधार पर होता है।

पहलवानों और मैच पर बारीकी से नज़र रखने के लिए चार अधिकारी होते हैं। इनमें से एक मैच-रैफरी होता है जो पूरे मुकाबले पर नज़र रखता है। वह पहलवानों को फाउल के निर्देश देता है। अगर किसी पहलवान को चोट लग गई हो तो वह मैच रुकवा भी सकता है।

दूसरा अधिकारी जज होता है जो रैफरी पर नज़र रखता है। अगर उसे लगता है कि रैफरी ने गलत निर्णय दिया है तो वह अपनी छड़ी उठाकर संकेत देता है। जज पहलवानों को उनके प्रदर्शन के आधार पर अंक भी देता है।

मैट चेयरमैन तीसरा अधिकारी होता है। कुश्ती के परिणामों की घोषणा मैट चेयरमैन ही करता है। परिणामों की घोषणा के पहले वह जज व रैफरी से सलाह करता है और उनके स्कोर देखता है। इसी स्कोर के आधार पर मैच का परिणाम तय होता है। चौथा अधिकारी समय का हिसाब-किताब रखता है।

कुश्ती शुरू होने से पहले दोनों पहलवान हाथ मिलाते हैं। रैफरी की सीटी के साथ ही कुश्ती शुरू हो जाती है। दोनों पहलवान एक-दूसरे को चित करने के लिए तरह-तरह के दाँव-पेंच आज़माते हैं। इसलिए हर क्षण रोमांचित करता है। हर अच्छे दाँव पर दर्शक ताली बजाकर पहलवानों का हौंसला बढ़ाते हैं।

यदि कुश्ती के दौरान कोई पहलवान गद्दे से बाहर पहुँच जाता है तो उसे गद्दे पर उसी स्थिति में

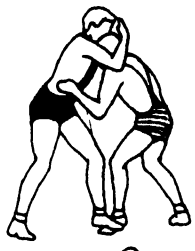

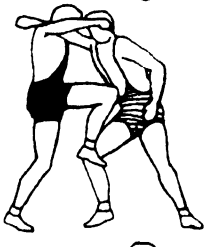
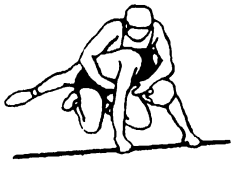

गलत तरीके जिन पर रोक लगाई जाती है

लाकर रैफरी फिर से कुश्ती शुरू करवाता है।

अच्छे दाँव-पेंच से कोई पहलवान दूसरे पहलवान को चित किए बगैर भी कुश्ती जीत सकता है। किसी पहलवान को कब अंक मिलेंगे। इसके लिए भी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में स्पष्ट नियम हैं। कुछ मुख्य नियम जैसे चित होने के खतरे में लाने वाले पहलवान को 2 अंक मिलते हैं। लेकिन अगर खतरे की स्थिति पाँच सेकण्ड से ज़्यादा समय तक रहे और इस खतरे को झेल रहा पहलवान मुश्किल से चित होने से बचे तो विरोधी पहलवान को तीन अंक मिलते हैं।

खतरे की कई स्थितियाँ हो सकती हैं। जैसे जब एक पहलवान की पीठ गद्दे की तरफ 90 डिग्री के कोण से कम कोण पर झुकी हो, और उस समय वह कमर के ऊपर के हिस्से से बचने की कोशिश कर रहा हो। कंधे गद्दे से न छू जाएँ इसलिए उसने खुद को कुहनी पर टिका लिया हो। अगर खतरे की इन परिस्थितियों का सामना कर रहा पहलवान पाँच तक गिनती गिनने तक दूसरे पहलवान पर हावी नहीं हो पाता तो विरोधी पहलवान या हावी पहलवान को दो अंक मिल जाते हैं।

फाउल : कुश्ती के दौरान अगर कोई पहलवान विरोधी पहलवान के पैर पर पैर रखता है तो इसे फाउल माना जाता है। इसके अलावा आँख, मुँह पकड़ने, गला दबाने, गद्दे के किनारे पकड़ने, पाँव अटकाकर गिराने, बाल खींचने, पोशाक खींचने को भी फाउल माना जाता है। वे सभी तरीके भी फाउल माने जाते हैं जो जानबूझकर किसी पहलवान को शारीरिक नुकसान पहुँचाने के लिए अपनाए जाते हों।

अब तक हम कुश्ती की फ्रीस्टाइल शैली की बात कर रहे थे। इसमें पहलवान विरोधी पहलवान की कमर से नीचे के भाग को पकड़कर दाँव लगा सकता है जबकि दूसरी शैली यानी ग्रीको रोमन में ऐसा करना मना है। ऐसे ही ग्रीको रोमन शैली में विरोधी को गिराने के लिए टाँगों का इस्तेमाल कर सकते हैं जबकि फ्रीस्टाइल शैली में टाँगों का इस्तेमाल करके विरोधी को गिराना मना है।

अंतिम अंक गणना : हर कुश्ती में कुल 4 अंक निर्धारित होते हैं। इन अंकों को प्रदर्शन के आधार पर दोनों पहलवानों में बाँटा जाता है। चूँकि अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कुश्ती के कई चक्र होते हैं इसलिए अधिक अंक पाकर जीतना अहमियत रखता है। क्योंकि आखिर में इन्हीं अंकों के आधार पर अगले चक्रों में प्रवेश मिलता है।

चित करके जीतने वाले पहलवान को पूरे चार अंक मिलते हैं। अगर दो पहलवानों के अंकों में (जो जज द्वारा उनके प्रदर्शन के आधार पर उन्हें दिए गए हैं)12 या अधिक अंकों का अंतर रहता है तो भी जीतने वाले पहलवान को पूरे चार अंक मिलते हैं। अगर अंकों का यह अंतर 12 से कम लेकिन 8 से अधिक है तो जीतने वाले पहलवान को साढ़े तीन और हारने वाले पहलवान को आधा अंक मिलता है। यदि अंकों का अंतर इससे भी कम है तो विजेता को तीन और हारने वाले पहलवान को एक अंक मिलता है।

तो ये थी कुश्ती की कुछ खास-खास जानकारी। कुश्ती खेलते या देखते समय अगर कोई नई स्थिति बनती है तो अपने बड़ों से तो पूछोगे ही। तुम चाहो तो हमें भी लिख सकते हो।

● **प्रस्तुति : सुशील शुक्ल**

सूक्ष्मदर्शी से . . .

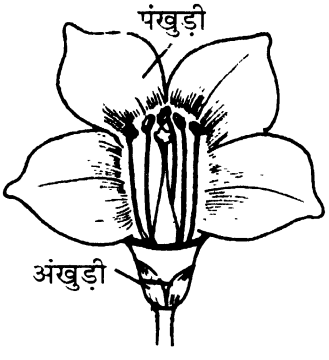

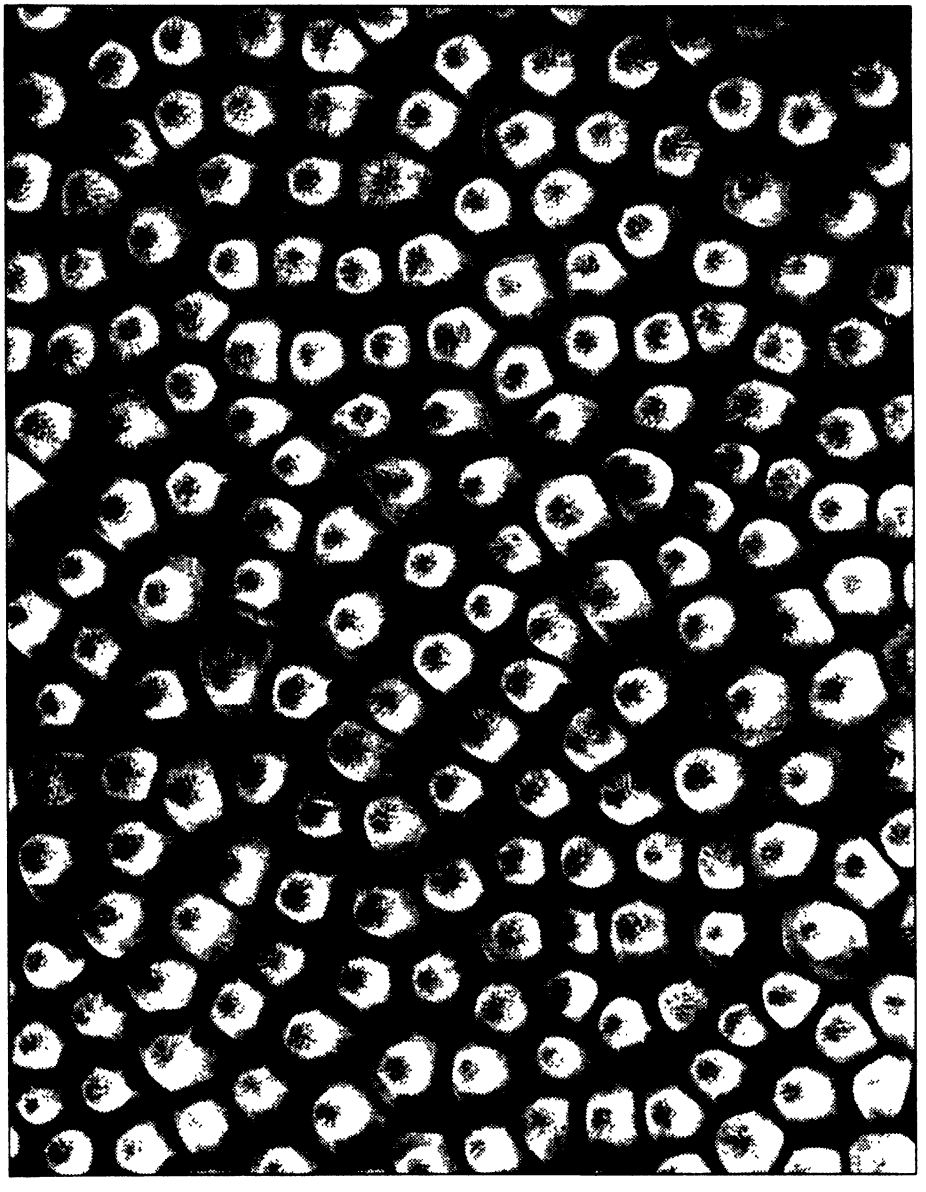

यह नानखटाइयों का ढेर नहीं है। यह तो सूक्ष्मदर्शी की आँखों से देखी गई गुलाब की पंखुड़ी का एक हिस्सा है। गुम्बद जैसे उठे हुए हिस्से पंखुड़ी की कोशिकाएँ हैं। वैसे पंखुड़ी को देखो तो वह बिल्कुल सपाट दिखती है। लेकिन सूक्ष्मदर्शी से देखने पर यह मूर्तिकला का नमूना जान पड़ती है। चित्र में सामान्य पंखुड़ी को 365 गुना बड़ा दिखाया गया है।

चित्र सौजन्य "अण्डर द मायक्रोस्कोप"

आराम

मुनिया ने देखा आज पापा नहीं है
मुनिया ने पाया, आज माँ भी नहीं है

मुनिया ने पाया आज, घर बिल्कुल सूना
छुआ उसने वह सब, था मना जिसको छूना

औरत की फोटो में मूँछें बनाईं
राजा की फोटो में पूँछें लगाईं

कहा उसने वह सब जो था उसको कहना
सुना उसने वह सब, जो था उसको सुनना

गाना भी गाया, नाची-कूदी-फाँदी
गुड्डे और गुड़िया की कर डाली शादी

छोटी-सी मुनिया को, बहुत सा काम है
किस्मत में उसकी कहाँ आराम है

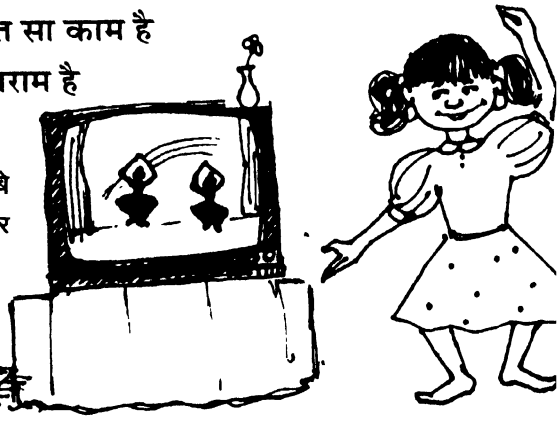

● रमेशदत्त दुबे
● चित्र : नुपुर

जिन्होंने सच बोलना सिखाया...

प्रायमरी के बाद जब माध्यमिक शाला में दाखिल हुए तो हमें जो शिक्षक सबसे अच्छे लगे वो थे श्री एस.एस. दीवान, जो कि गणित पढ़ाया करते थे। गणित के कठिन से कठिन पहलुओं को इतने सहज तरीके से समझाते कि कठिन शब्द हमारी शब्दावली से ही बाहर हो गया था। और तभी से गणित हमारा प्रिय विषय बन गया। वे पढ़ाई के अलावा सभी अन्य चीज़ों पर भी ध्यान देते थे। नित नई क्रीड़ाएँ, बालसभा या यूँ कहें हमारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तरफ रुझान उन्हीं की देन है।

दीवान सर इटारसी से पढ़ाने आया करते थे। दो घण्टे की भरपूर थकान को हम (हमारी पार्टी) अपनी मुस्कान भरे स्वागत से दूर करते थे। उनके दूर से दिखने पर ही हम लोगों में उनके स्वागत हेतु हलचल मच जाया करती थी। ठीक उसी तरह जिस तरह से हम प्रिय मेहमान के आ जाने पर करते हैं। चूँकि हमारे स्कूल में चपरासी नहीं था इसलिए पानी पिलाने का ज़िम्मा भी हमारे ऊपर ही था।

यहाँ मैं बता दूँ कि हम अन्य शिक्षकों के लिए तो नल से पानी लाते थे, लेकिन दीवान सर के लिए घर से ही छना हुआ पानी लाते थे। गर्मी में ठण्डा, बरसात में गर्म पानी की सुविधा। चूँकि हमारा घर पास ही में था इसलिए खुद दीवान सर भी मना

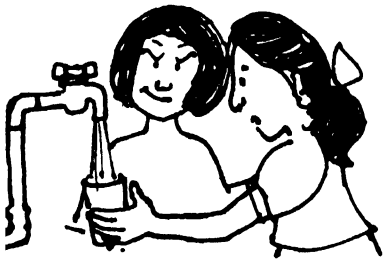

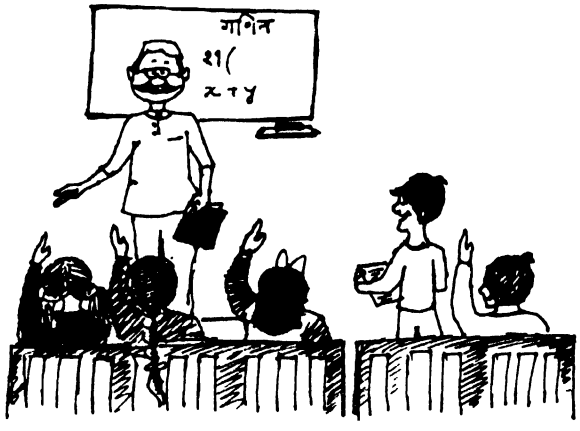

नहीं करते थे। सर खुद ही उबला पानी आदि की हिदायतें दिया करते थे।

ऐसे ही एक दिन दीवान सर बस के टाईम पर नहीं आए। तब हम अन्य शिक्षकों को पानी पिला रहे थे। तभी दीवान सर आ गए। मैं नल का पानी ही लेकर सर के पास जाने लगी तो मेरी सहेली ने टोका, 'चलो घर से पानी लाते हैं।' लेकिन मैंने कहा, 'आज यही पानी पिला देते हैं।'

सर ने पूछा, 'घर का पानी है?' (सर रोज़ पूछते थे।) मैंने कहा, 'हाँ।' सर कुछ बोलते इसके पहले मेरी सहेली ने कह दिया, 'नहीं, सर नल का पानी है।' सर ने कहा, 'क्यों बेटा, झूठ क्यों बोल रही हो। मुझे दुख इस बात नहीं कि तुम मुझे ये पानी पिला रही हो, बल्कि मुझे चिंता है कि तुम अभी से छोटी-छोटी बातों में झूठ बोलने लगोगी तो आगे चलके झूठ बोलना तुम्हारी आदत में शामिल हो जाएगा।'

बस, ये शब्द मेरे दिलो-दिमाग पर ऐसे छा गए कि आज तक मैं झूठ नहीं बोलती।

● नीतू मालवीय, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

● चित्र : नुपुर

(1)

मीरा के पास 90 मीटर लम्बा कपड़ा है। उसे उसके एक-एक मीटर के टुकड़े करने हैं। अगर एक टुकड़ा काटने में 3 सेकण्ड लगते हैं तो 90 टुकड़े काटने में कितना समय लगेगा? टुकड़े एक-एक करके ही काटने हैं।

(2)

2 ? 6 ? 3 ? 4 ? 5 ? 8 = 12

9 ? 8 ? 1? 3 ? 5 ? 2 = 12

7 ? 9 ? 8 ? 4 ? 3 ? 5 = 12

प्रश्न-चिन्हों की जगह तुम्हें जोड़ या घटाने (+/–) के चिन्ह लगाने हैं।

(3)

इस चित्र में एक प्राणी छुपा बैठा है। उसे ढूँढो तो ज़रा।

(4)

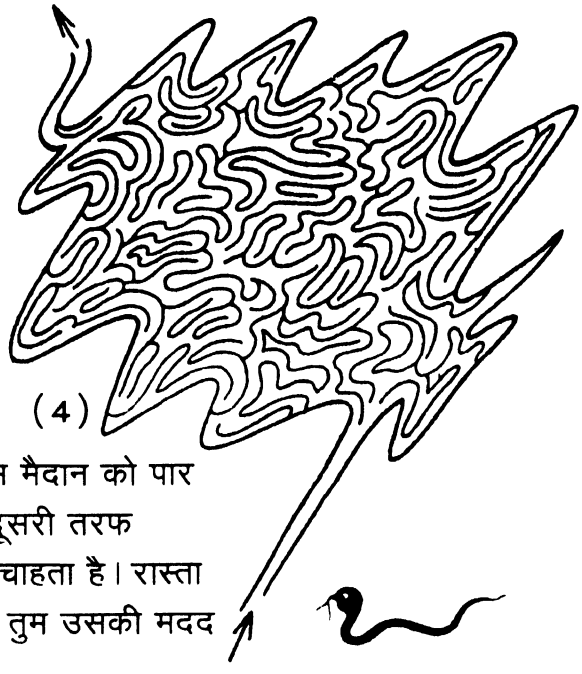

साँप इस मैदान को पार करके दूसरी तरफ पहुँचना चाहता है। रास्ता ढूँढने में तुम उसकी मदद करोगे?

(5)

46 और 96 में एक रोचक विशेषता है। इनमें से किसी भी संख्या में अंकों की आपसी जगहें बदल दी जाएँ तो भी उनका गुणनफल पहले जैसा ही रहता है। तुम भी करके देखो।

46 X 96 = 4416

64 X 69 = 4416

क्या तुम ऐसी और संख्याओं की जोड़ियाँ ढूँढ सकते हो?

(6)

एक निगाह में देखने पर भले ही दोनों चित्र एक से लगें लेकिन बारीकी से देखने पर इनमें कुछ अन्तर मिलेंगे। क्या तुम ये अन्तर ढूँढ सकते हो?

(7)

दो आदमी एक दुकान पर जूता खरीदने गए। दोनों ने पच्चीस-पच्चीस रुपए के दो जोड़ी जूते खरीदे।

जूते लेकर वे कुछ दूर ही पहुँचे थे कि उन्हें उस दुकान के नौकर ने रोका। दरअसल हुआ यूँ था कि जब नौकर ने इन दोनों से पचास रुपए लेकर मालिक को दिए तो मालिक ने 10% छूट काटकर पाँच रुपए वापिस किए। जिसमें दो, दो-दो रुपए के नोट थे और एक, एक का।

नौकर ने सोचा कि कौन खुल्ले के झमेले में पड़े। उसने दोनों को दो-दो रुपए वापिस कर दिए। और एक रुपया खुद रख लिया।

अब कुल गणित देखें तो दोनों ने 25-25 रुपए दिए। दो-दो रुपए उन्हें नौकर ने वापस कर दिए। यानी उनके 23-23 रुपए खर्च हुए। एक रुपया नौकर के पास रहा। इस तरह कुल हुए 23+23+4+1= 51 रुपए।

अरे! यह तो एक रुपया बढ़ गया। मगर कैसे?

(8)

यहाँ दिए गए बर्तन के चित्र में उसके कुछ टुकड़े किए गए हैं और उन पर नम्बर भी डाले गए हैं। साथ के चित्र में ये टुकड़े अलग-अलग बिखरे हैं। इन्हें पहचानो और उन पर नम्बर डालो

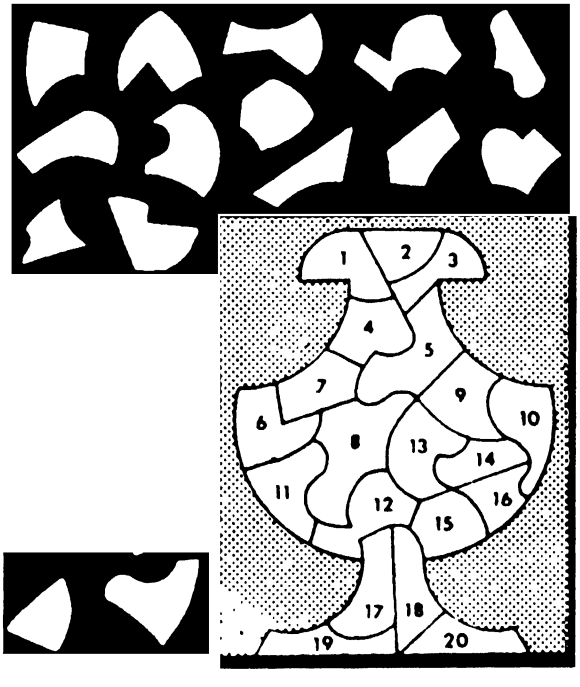

चित्र बनाओ, रंग भरो

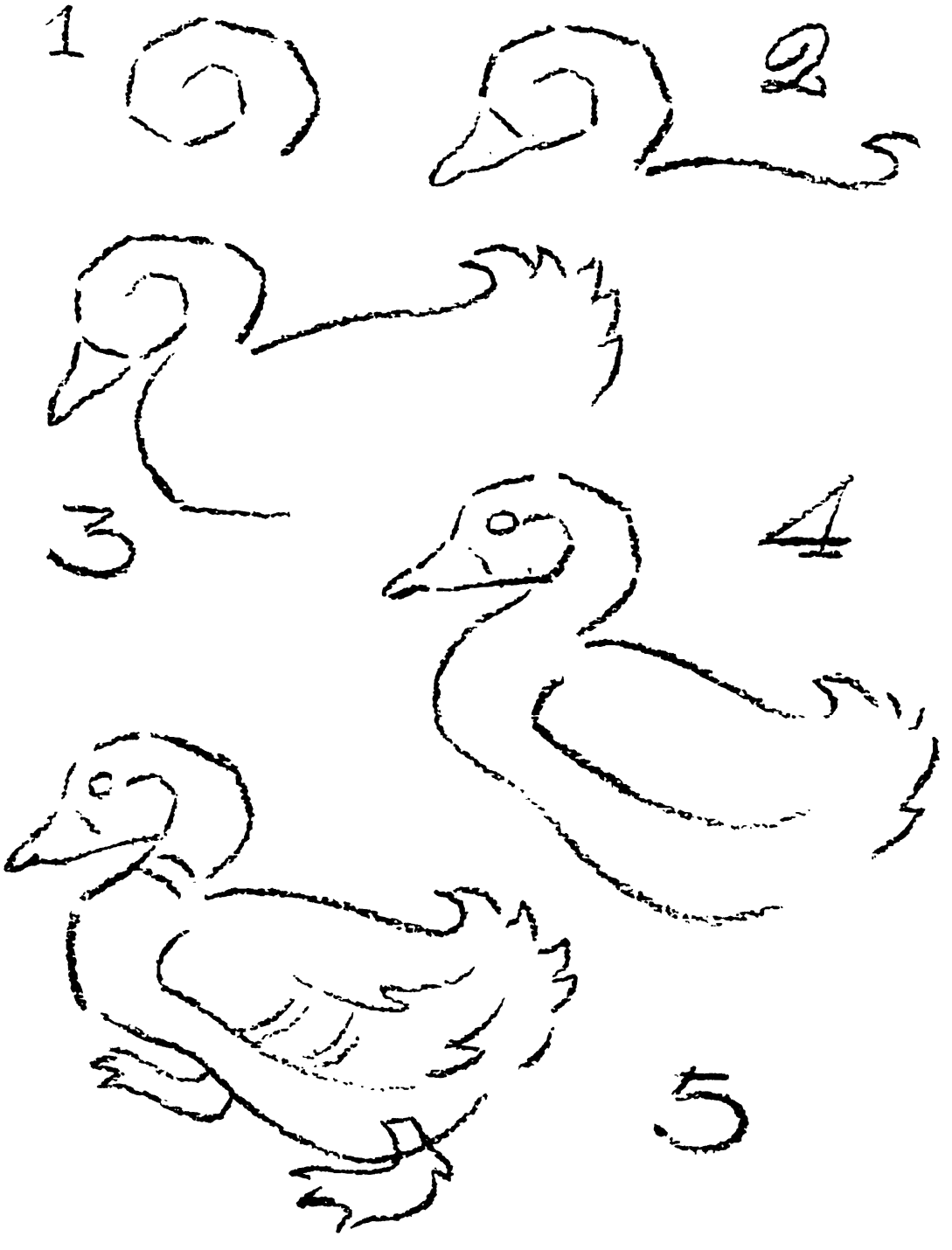

गाएँ गीत- 11

पत्ता-पत्ता, फूल-फूल

तुम कितनी सब्जियों के बारे में जानते हो? और फलों के बारे में? शायद एकदम से सभी नाम याद नहीं आ पाएँ। इनकी एक सूची बनाना और जैसे-जैसे उनके नाम ध्यान में आएँ, नोट करते जाना।

यह सोचने की कोशिश करो कि इन सब्जियों या फलों के नाम तुम्हें कहाँ से सुनकर या देखकर पता चले। इनमें से कुछ को तो तुम अक्सर अपने गाँव या मोहल्ले के बाज़ार में देखते होगे। कुछ तो तुम्हारी बाड़ी में भी उगाए जाते होंगे। कुछ सब्जियाँ ऐसी भी होती हैं जो उगती तो दूसरे इलाके में हैं लेकिन हमारे बाज़ार में भी मिलती हैं। यह भी पता करना कौन-सी सब्जी किस इलाके में अधिक होती है।

अरे..रे..रे.. हम चले तो थे खेलने और गीत गाने लेकिन लगे सब्जी बनाने। और फल उगाने। लेकिन करें क्या, इस खेल का रूप ही कुछ ऐसा है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल और बिहार के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में यह खेल काफी मशहूर है। अलग-अलग इलाके में इसके नाम भी अलग-अलग हैं। चलो, हम लोग इसे पत्ता-पत्ता, फूल-फूल कहेंगे।

इस खेल में तीन से लेकर छह-सात लड़के-लड़कियों की टोली बनाई जा सकती है। जमा भीड़ की संख्या सम होनी चाहिए ताकि बराबर बटवारा हो सके। एक साथ दो टोलियाँ खेल सकती हैं। इसे मैदान, घर की छत या दूसरी छोटी जगहों में भी खेला जा सकता है।

टोली का चुनाव करने के लिए पहले दो लोग कप्तान या मेठ बनाए जाते हैं। सिक्का उछालकर यह तय किया जाता है कि जमा लड़के-लड़कियों में से कौन पहले चुनाव करेगा। बारी-बारी से वह जमा समूह से एक-एक को चुनते जाते हैं।

जैसेः

मेठ नं 1: मेरी तरफ मोहन

मेठ नं 2: मेरी तरफ राजू

मेठ नं 1: मेरी तरफ ईरा

मेठ नं 2: मेरी तरफ चिन्ना.....

दूसरा तरीका यह होता है कि जमा लड़के-लड़कियाँ आपस में जोड़े बना लेते हैं। जोड़ा बनाते समय यह ख्याल रखा जाता है कि उम्र, शिक्षा और शारीरिक, मानसिक क्षमता में बराबरी हो।

मेठ भीड़ से थोड़ी दूर जाकर खड़े हो जाते हैं। फिर हरेक जोड़ा आपस में कुछ नाम रखकर उनके पास पहुँचता है। जैसे एक जोड़ा अपना नाम करेला-गिलकी रखता है। फिर यह जोड़ा मेठों के पास जाकर कहेगा-

इड़िंग-विड़िंग दो बालें आईं

कोई ले करेला, कोई ले गिलकी

मेठों में जिसे पहले चुनने का हक (सिक्का उछालकर) मिला होगा वह पहले कोई भी नाम बोल सकता है। इस तरह उस नाम वाला व्यक्ति उसकी टोली में होगा। ऐसे ही दूसरे जोड़े आम-अमरूद, अनार-केला, बैंगन-आलू, हीरा-मोती जैसे नाम रखकर मेठों के पास पहुँचते हैं।

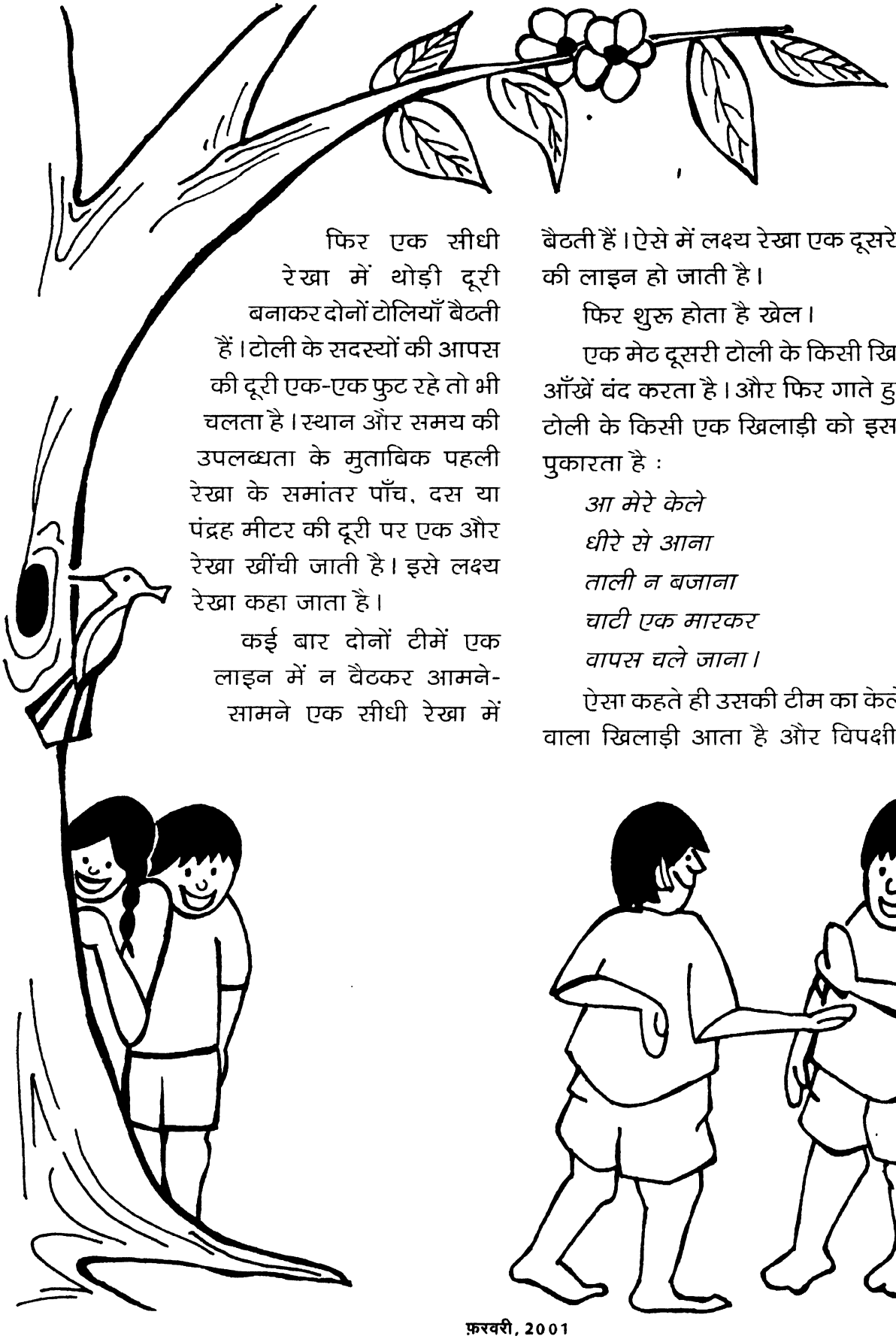

फिर एक सीधी रेखा में थोड़ी दूरी बनाकर दोनों टोलियाँ बैठती हैं। टोली के सदस्यों की आपस की दूरी एक-एक फुट रहे तो भी चलता है। स्थान और समय की उपलब्धता के मुताबिक पहली रेखा के समांतर पाँच, दस या पंद्रह मीटर की दूरी पर एक और रेखा खींची जाती है। इसे लक्ष्य रेखा कहा जाता है।

कई बार दोनों टीमें एक लाइन में न बैठकर आमने-सामने एक सीधी रेखा में बैठती हैं। ऐसे में लक्ष्य रेखा एक दूसरे के बैठने की लाइन हो जाती है।

फिर शुरू होता है खेल।

एक मेठ दूसरी टोली के किसी खिलाड़ी की आँखें बंद करता है। और फिर गाते हुए अपनी टोली के किसी एक खिलाड़ी को इस तरह से पुकारता है :

आ मेरे केले
धीरे से आना
ताली न बजाना
चाटी एक मारकर
वापस चले जाना।

ऐसा कहते ही उसकी टीम का केले के नाम वाला खिलाड़ी आता है और विपक्षी टीम के

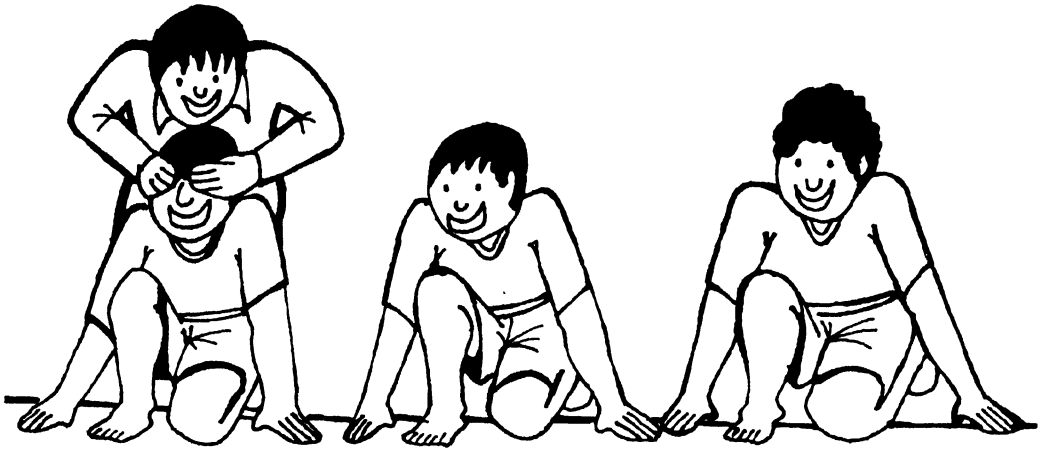

जिस खिलाड़ी की आँख मेठ बंद किए होता है उसको छूकर वापस अपनी जगह पर जाकर बैठ जाता है।

जिस खिलाड़ी की आँख बंद की गई थी उसे पहचानना होता है कि उसे विपक्षी टोली का कौन खिलाड़ी छूकर गया है। अगर वह पहचान लेता है तो कूदकर-कूदकर लक्ष्य रेखा पर पहुँच जाता है। अगर नहीं पहचान पाता तो छूने वाला खिलाड़ी लक्ष्य रेखा पर पहुँच जाता है।

फिर दूसरा मेठ विपक्षी टोली के किसी खिलाड़ी की आँख मूँदता है। और फिर गीत गाते हुए अपनी टोली के खिलाड़ी को बुलाता है:

आ मेरे.....
धीरे से आना
ताली ना बजाना
चाटी एक मारकर
वापस चले जाना।

बारी-बारी से यह क्रम चलता रहता है।

यहाँ गौर करने की बात यह है कि मेठ खेल के वक्त जिस नाम से खिलाड़ी को पुकारते हैं, वह बँटवारे के समय का नाम नहीं होता। टोली बँटने के बाद दोनों मेठ, अपने खिलाड़ियों का फिर से नामकरण करते हैं।

मेठ अपनी टोली के खिलाड़ियों के नाम अलग-अलग सब्जियों, फलों, फूलों के नाम पर रखते हैं।

कई बार नए नाम सुनकर दर्शक ठहाके लगाते हैं। मेठ भी चुटीले नाम ढूँढकर रखते हैं। कई बार खास नाम से पुकारे जाने वाले खिलाड़ी उस नाम के मुताबिक अभिनय करते हुए विपक्षी खिलाड़ी को छूने आते हैं।

एक-एक कर खिलाड़ी लक्ष्य रेखा पर पहुँचते जाते हैं। जिस टीम के सभी खिलाड़ी पहले लक्ष्य रेखा पर पहुँचते हैं। उस टीम को विजयी माना जाता है।

अक्सर इस खेल में भाजी, सब्जियों और फलों के नाम रखे जाते हैं।

कई बार यह भी तय कर लिया जाता है सिर्फ सब्जी-भाजी या फल या अन्न या बर्तन आदि के ही नाम रखने हैं।

तो, कैसा लगा यह खेल? अब जब तुम्हारी भाजी, सब्जी और फलों वाली लिस्ट पूरी हो जाए तो यह खेल ज़रूर खेलना। फिर जब भी कोई पूछेगा कि कितने नाम याद हैं तो तुम्हें नोटबुक नहीं निकालनी पड़ेगी।

● **प्रस्तुति : लालबहादुर ओझा**
● **चित्र : आशीष नगरकर**

वर्ग पहेली - 115

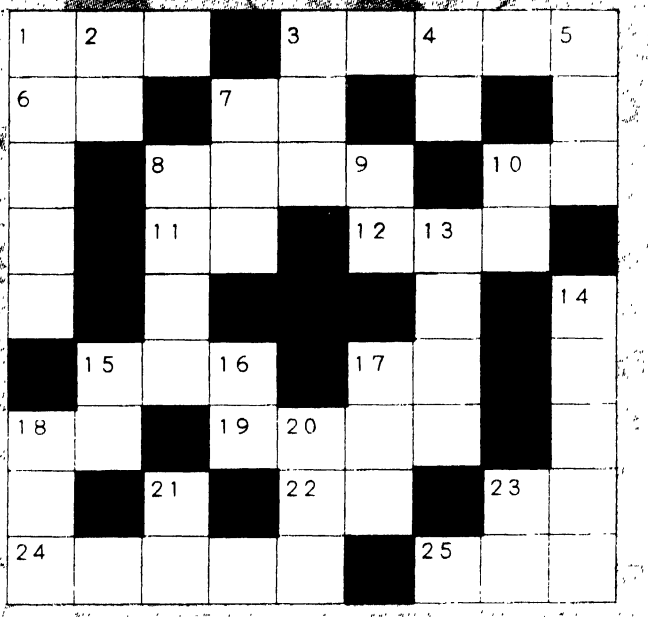

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. आश्चर्य, ताज्जुब (3)
3. उर्दू में अंताक्षरी (3,2)
6. सात और तीन (2)
7. केला बेर की तर्ज पर (2)
8. अकारण, बिलावजह (4)
10. एक चिड़िया, एक नदी (2)
11. मटर में है, दोहरा-दोहराकर याद करना (2)
12. अभ्यास (3)
15. आमना . . . . (3)
17. नया, वन में (2)
18. सौ हजार यानी एक (2)
19. जरूरत (4)
22. प्रत्येक, भिन्न के ऊपर का हिस्सा (2)
23. मेघालय की एक पहाड़ी भी जनजाति भी (2)
24. आगरा की एक प्रसिद्ध इमारत (5)
25. घड़ा, लशकर में (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. आंध्र प्रदेश की राजधानी (5)
2. मजा, फलादि का तरल भाग (2)
3. काम, जड़ कार में (3)
4. नया में है हवा में उड़ने वाला (2)
5. जिंदगी, वन जीव में (3)
7. मल्लाह, नाविक (3)
8. निर्दयी, हम बेर में (4)
9. राम, सूर्य (2)
10. जलानेवाला (2)
13. खानाखराबी, याद या वर में (4)
14. जान की बाजी लगा देनेवाला, अफसर रोशन में (5)
15. प्रतिष्ठा (2)
16. गड़गड़ाहट या तेज ध्वनि (2)
17. असहमति (3)
18. खोना, ताला पड़ना में (3)
20. पुस्तक रखने की लकड़ी की चीज, लहर में (3)
21. मूल्य, भाव (2)
23. लगा में है शरीर का एक अंग (2)

वर्ग पहेली - 115 का हल चकमक के अप्रैल, 2001 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर साफ लिखकर भेजें।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अप्रैल, 2001 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

कीड़ों का व्यवहार

हमारे आसपास कई सारे छोटे-छोटे कीड़े रहते हैं। कुछ को तो हम देख पाते हैं और उन्हें पहचानते भी हैं। लेकिन कई हमारी नज़र में नहीं आते। कारण यह कि या तो वे बहुत छोटे होते हैं या फिर वे जिस जगह रहते हैं उसी के रंग रूप में घुल-मिल जाते हैं। चलो कीड़ों को कुछ और जानने के लिए कुछ प्रयोग करते हैं।

छिपना और सुरक्षा

आवश्यक सामान – एक लम्बी डोरी, चार खूँटे, माचिस की तीलियाँ।

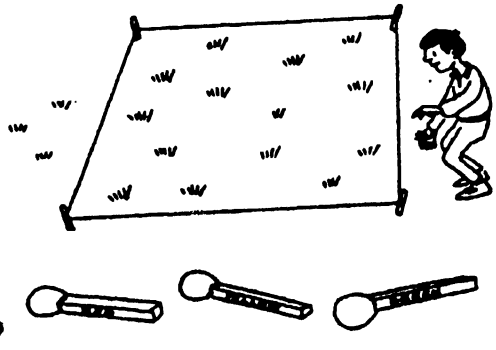

ज़मीन पर घास के एक टुकड़े पर खूँटों और डोरी से निशान लगाओ। अब कुछ माचिस की तीलियाँ लो। कुछ को घास के रंग में रंगो और कुछ को तेज़ चमकीले रंगों से।

फिर इन तीलियों को घेरे हुए हिस्से पर इधर-उधर बिखरा दो। अब देखो किन तीलियों को ढूँढना आसान है?

एक छोटे से कीड़े के छिपने के तरीके क्या-क्या हो सकते हैं। किसी शिकारी जानवर को छिपने के तरीकों से क्या फायदे हैं? इस बारे में अपने दोस्तों से चर्चा करो।

जीवित रहने के लिए व्यवहार

आवश्यक सामान – काँच की दो पारदर्शी प्लेटें, कीड़े (इल्ली), सूखा और गीला कागज़, काला पेंट

इल्लियाँ तेज़ धूप में इसलिए जल्दी मर जाती हैं, क्योंकि उनके शरीर का सारा पानी सूख जाता है। इन प्रयोगों से तुम यह देख सकते हो कि किसी जीव का व्यवहार उसे जीवित रखने में कैसे मदद करता है।

प्रकाश की प्रतिक्रिया

दोनों प्लेटों के आधे भाग को या तो ढँक दो या फिर उन्हें काले पेंट से रंग दो। अब दोनों प्लेटों को एक-दूसरे पर इस प्रकार रखो जिससे उनके आधे भाग में अंधेरा हो और आधे भाग में उजाला हो। यानी काले

दो पारदर्शी काँच की प्लेटें

भाग के ऊपर काला आए। अब नीचे वाली प्लेट में 10 इल्लियाँ रखो और ऊपर से दूसरी प्लेट को ढक्कन जैसे ढँक दो। अब हर 10 मिनिट बाद, ढक्कन को उठाकर देखो कि दोनों हिस्सों में कितनी-कितनी इल्लियाँ हैं।

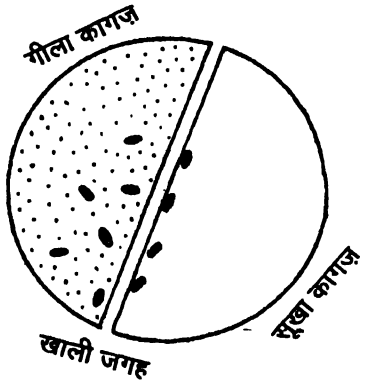

नमी की प्रतिक्रिया

एक प्लेट के आधे भाग में सूखा सोख्ता कागज़ रखो और दूसरे हिस्से में गीला। अब प्लेट पर 10–12 इल्लियाँ रखकर दूसरी प्लेट को ऊपर ढक्कन की तरह रखो। ऊपर से कपड़ा ढँको जिससे अन्दर अँधेरा हो जाए। अब हर 10 मिनट बाद गिनो दोनों तरफ कितनी-कितनी इल्लियाँ हैं।

तुम चाहो तो कई परिस्थितियों की जाँच एक साथ कर सकते हो। उदाहरण के लिए दोनों प्लेटों के आधे भाग पर सोख्ता कागज़ रखो।

अगर अब दोनों प्लेटों को धूप में रखा जाए तो क्या नतीजे पहले जैसे ही आएँगे? नमी और धूप में से कौन ज़्यादा महत्वपूर्ण है – क्या इल्लियाँ प्रकाश और नमी वाली जगह पसन्द करती हैं या अँधेरी और सूखी?

ऐसे ही कुछ और प्रयोग सूझें तो करके देखना और हमें भी लिख भेजना।

(वी. एस. ओ. साइंस टीचर्स हेंडबुक से साभार।)

जनवरी 2001 के माथापच्ची के हल

1.

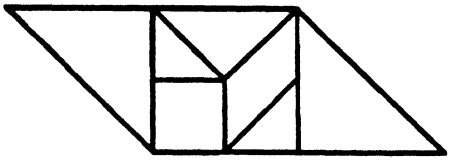

3. शर्त लगाकर देखो हारने पर भी फायदा होगा।
4. 32547891X 6 = 195287346
6. अनाड़ी, बबाल, कानन आदि।
7. मेंढक जी आठ दिन बाद बाहर निकल पाए। हर दिन एक फुट के हिसाब से ही ऊपर चढ़ पाते थे। इस तरह सात दिन में सात फुट चढ़े और आठवे दिन तीन फुट और कुँए से बाहर निकल आए।

वर्ग पहेली 113 का हल

क		का	म	ना		ब	ता	सा
पि	ना	ज		जा	दू		ली	
ल		ल		य		गो	म	ती
	दि		र	ज	त			त
व	न	वा	स		र	ह	ब	र
की			द	र	स		स	
ल	जा	लु		म		क		धी
	त		खा	जा		ठो	क	र
चो	क	र		न	श्त	र		ज

सही हल भेजने वाले पाठक हैं – अभिषेक और आकांक्षा क्षत्री, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। इन्हें जनवरी, 2001 का अंक भेजा जा रहा है।

भूकम्प

पिछले दिनों गुजरात में आए भूकम्प के बारे में तुमने भी सुना होगा। इस भूकम्प से हज़ारों लोग मारे गए और लाखों लोग बेघर हो गए। कई शहर लगभग पूरी तरह मलबों में बदल गए। इसके पहले भी हमारे देश में कई बार भूकम्प आ चुके हैं।

भूकम्प का अर्थ तो तुम समझते ही हो। भूकम्प यानी धरती का काँपना। दुनिया में रोज़ ही कहीं न कहीं भूकम्प आता ही रहता है। कम तीव्रता वाले यानी हल्के झटके लगते ही रहते हैं। लेकिन बड़े भूकम्प जिससे ज़मीन में दरारें पड़ जाएँ और शहर के शहर तबाह हो जाएँ, ऐसा कभी-कभी होता है।

भूकम्प केवल ज़मीन पर ही नहीं आते बल्कि समुद्र तल पर भी आते हैं। ऐसा होने पर समुद्र का पानी हिलता है और उसमें लहरें उठती हैं। कभी-कभी ये लहरें भयानक रूप ले लेती हैं। जिससे समुद्र के किनारे बसे गाँव और शहर तबाह हो जाते हैं।

हाल ही में अल साल्वाडोर में आए भूकम्प से घायल हुए बच्चे

भूकम्प आने के कारणों को लेकर तो कई खोजबीन हुई हैं। इन खोजों में भूकम्पमापी यंत्रों ने बहुत मदद पहुँचाई। इन्हीं से पता चला कि हर रोज़ छोटे-छोटे भूकम्प आते ही रहते हैं। हालाँकि भूकम्प यूँ ही हर कहीं नहीं आते बल्कि कुछ खास इलाके हैं जिनमें भूकम्प आने की गुंजाइश ज़्यादा होती है।

भूकम्प पहचानने के यंत्र की मदद से भूकम्प की तीव्रता के बारे में पता लगाया जा सकता है। इसे सीसमोग्राफ कहते हैं। तुमने सुना होगा कि गुजरात में आए भूकम्प को रिक्टर पैमाने पर 7.9 तीव्रता वाला आँका गया।

1935 में चार्ल्स फ्रांसिस रिक्टर ने भूकम्प की शक्ति नापने का पैमाना बनाया था। यह पैमाना 9 भागों में बँटा है। इन भागों को 1 से 9 तक के नम्बर दिए गए हैं। इस पैमाने को रिक्टर पैमाना कहते हैं। रिक्टर पैमाने का हर नम्बर पहले से 31 गुना अधिक शक्तिशाली भूकम्प को दर्शाता है।

इस पैमाने पर एक नम्बर बताने वाला भूकम्प इतना हल्का होता है कि हम उसे महसूस नहीं कर सकते। उसे केवल सीसमोग्राफ पर ही दर्ज किया जा सकता है। दो नम्बर का भूकम्प बिना सीसमोग्राफ के भी महसूस किया जा सकता है। छह नम्बर के भूकम्प से दीवारों में दरारें पड़ जाती हैं और, नौ नम्बर के भूकम्प से तो तबाही आ

सीसमोग्राफ

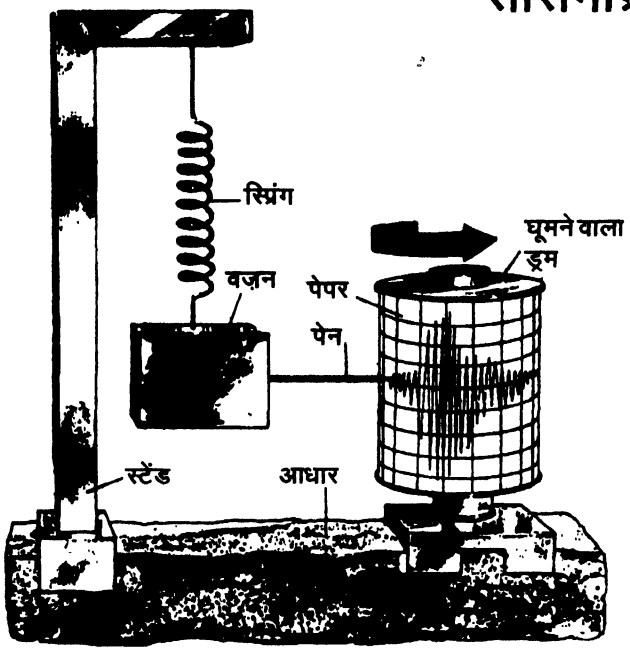

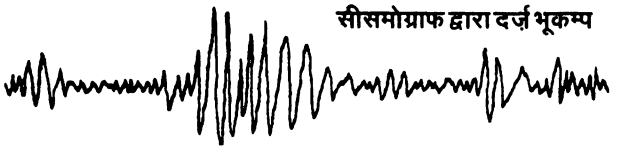

भूकम्प नापने के यंत्र को सीसमोग्राफ कहते हैं। देखते हैं कि सीसमोग्राफ किस प्रकार काम करता है?

चित्र में तुम देख रहे हो कि कंक्रीट से बने एक आधार पर स्टेंड से एक वज़न स्प्रिंग के सहारे लटका हुआ है। वज़न के एक सिरे पर एक पेन लगा है। जो एक घूमने वाले ड्रम को छू रहा है। ड्रम पर पेपर लिपटा होता है।

जब भूकम्प आता है तो स्प्रिग के कारण वजन तो स्थिर रहता है परन्तु ड्रम ऊपर नीचे होता है। ड्रम के ऊपर नीचे होने से पेन ड्रम पर लिपटे कागज़ पर रेखा खींचता है। भूकम्प जितना शक्तिशाली होगा लाइनें भी उतनी ही ऊपर नीचे होंगी।

जाती है। अभी तक कोई भूकम्प नौ नम्बर का नहीं आँका गया है। 1906 में जिस भूकम्प ने अमेरिका के अलास्का शहर को तबाह कर दिया था वह रिक्टर पैमाने पर 8.25 मापा गया था।

अभी भी भूकम्प के बारे में खोजें चल रही हैं। जिससे कि भूकम्प की जानकारी पहले हो जाए तो लोगों की ज़िंदगी बचाई जा सके।

बहरहाल भूकम्प तो पृथ्वी में होने वाली हलचल का नतीजा है। लेकिन भूकम्प से हमेशा ही जान या माल का नुकसान नहीं होता। पृथ्वी पर जहाँ आबादी नहीं है वहाँ भी भूकम्प आते हैं। किन्तु जहाँ आबादी है वहाँ भी नुकसान खराब बनी इमारतों की वजह से ज़्यादा होता है।

दूसरे कुछ देशों ने इन घटनाओं से बहुत कुछ सीखा है। जैसे कि किस तरह के मकान बनाए जाना चाहिए। और जब भूकम्प आ जाए तब क्या करना चाहिए। हमारे देश में भी पहले कई बार भूकम्प आ चुका है, लेकिन हममें से ज़्यादातर लोग नहीं जानते कि भूकम्प आने पर क्या करें और क्या न करें। भूकम्प को तो आने से नहीं रोका जा सकता। लेकिन उससे होने वाले नुकसान को तो कम किया जा सकता है! ●

● द्रोपदी जेस्वानी, आठवीं, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

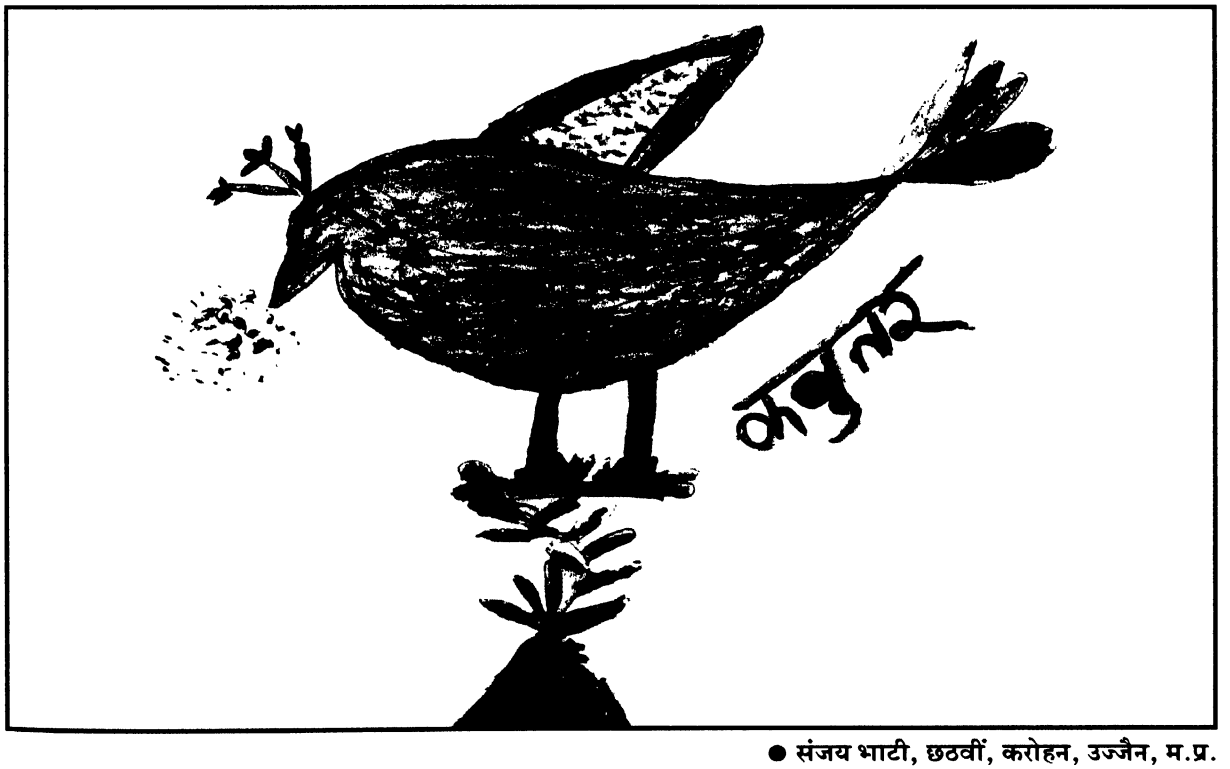

● संजय भाटी, छठवीं, करोहन, उज्जैन, म.प्र.

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/200

विशाल त्यागी, छठवीं, दिल्ली